छात्राध्ययन-सहायक-सामग्री

कक्षा द्वादशी

संस्कृतम्

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सत्र 2016-17

केन्द्रीय-विद्यालय-संगठनम्

नव देहली

संतोष कुमार मल्ल, भा.प्र.से.
आयुक्त
Santosh Kumar Mall, I.A.S.
Commissioner

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016
दूरभाष : 91–11–26512579, फैक्स : 91–11–26852680
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016 (India)
Tel. : 91-11-26512579, Fax : 91-11-26852680
E-mail : commissioner@kvsedu.org, Website : www.kvsangathan.nic.in

fi; fo|kfFk;k d fy, nk 'kCn

केंद्रीय विद्यालयों के कक्षा 12वीं में बोर्ड की परीक्षा में उपस्थित होने वाले विद्यार्थियों के लिए सहायक सामग्री प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

इस सहायक सामग्री का निर्माण परीक्षाओं से संबंधित आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है। मुख्य परीक्षाओं की तैयारी करने में जब आपको पाठ्य–सामग्री के अभ्यास दोहराने की इच्छा हो, निर्धारित समयावधि में प्रश्न–पत्रों को हल कर अपनी क्षमता की जांच करनी हो, अध्ययन के दौरान यदि किसी प्रश्न का उत्तर तुरंत पता लगाना हो जिसे पाठ्यपुस्तक में ढूँढ़ने में अधिक समय का अपव्यय होता है, किसी अध्याय/संकल्पना को आप शीघ्र दोहराना चाहते हों, पिछले वर्ष के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा के प्रश्न–पत्रों का अभ्यास करना हो, या किसी अध्याय/यूनिट के विषय में परीक्षा हेतु अपने ज्ञान की जांच करनी हो, यह सामग्री अनेक प्रकार से आपके लिए सहायक सिद्ध होगी।

इस सामग्री को अपने–अपने विषयों में विशेषज्ञ, अनुभवी तथा समर्पित शिक्षकों की टीम द्वारा गहन विचार विमर्श के बाद तैयार किया गया है। इसे तैयार करते समय यह भी ध्यान रखा गया है कि इसमें न केवल संगत सभी मदें शामिल की जाएं अपितु निर्धारित पाठ्य–पुस्तक के अनुसार कुछ अतिरिक्त मदें भी शामिल हों। फिर भी मेरा सुझाव है कि आप इस सामग्री को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीआरटी) की पाठ्यपुस्तकों के विकल्प के रूप में न ले इसका उपयोग ijd&lkexh के रूप में ही करें।

विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई इस सहायक सामग्री में वे सभी महत्वपूर्ण पहलू उपलब्ध हैं जिनकी विद्यार्थियों को प्रायः आवश्यकता होता है, जैसेः– प्रश्न–पत्र का प्रारूप, पाठ्यविवरण की इकाईयों एवं अध्यायों के प्रमुख–बिन्दु, मानचित्र तथा तालिकाओं के रूप में महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ, सभी अध्यायों से सैंपल टैस्ट मदें, अभ्यास हेतु बोर्ड की पिछली परीक्षाओं के प्रश्न–पत्र तथा अन्य प्रश्न–पत्र इत्यादि।

मुझे आशा है कि इस ''सहायक सामग्री'' का प्रयोग विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा भरपूर रूप से किया जाएगा। मुझे यह भी विश्वास है कि बोर्ड की परीक्षाओं में भी यह आपके लिए महत्त्वपूर्ण एवं लाभदायी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित!

संतोष

(संतोष कुमार मल्ल)
आयुक्त

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

ikDdFku

यह विद्यार्थियों के लिए तैयार 'सहायक सामग्री' हमारे विभिन्न विषयों के शिक्षकों द्वारा विषय–विशेषज्ञों के पर्यवेक्षण में इन–हाउस रूप में तैयार की गई है ताकि विद्यार्थियों को इससे सघन, संक्षिप्त और समेकित रूप में अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो सके जो उनके अधिगम में सहायक हो। इसमें पाठों के संक्षिप्त रूप, अध्याय के विषय में एक स्पष्ट विचारधारा, विभिन्न संकल्पनाओं को तालिकाबद्ध रूप में प्रदर्शित करना, जहां संभव हो वहाँ पर अध्यायों को चित्र रूप में प्रस्तुत करना, वर्ग–पहेलियाँ, सीबीएसई की पिछली परीक्षाओं के प्रश्न–पत्र और उनके उत्तर इत्यादि इस सहायक सामग्री में शामिल किए गए हैं।

इस सामग्री का निर्माण सीबीएसई के नवीनतम पाठ्यक्रम एवं प्रश्न–पत्रों के डिज़ाइन को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारियां संक्षिप्त रूप में उपलब्ध करवाई गई हैं। साथ ही इसमें वे सभी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बिन्दु भी शामिल किए गए हैं जो संबंधित विषय को भली प्रकार से दोहराने के लिए आवश्यक हैं।

इस पाठ्य सामग्री की विषय–वस्तु, डिज़ाइन, मानक और विषय सामग्री के प्रस्तुतीकरण में एकरूपता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अंतिम रूप केविसं(मु०) स्तर पर दिया गया है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस सामग्री से विद्यार्थी पाठों को शीघ्रता से हृदयंगम कर सकेंगे। यह सामग्री विद्यार्थियों को अधिक बेहतर प्रदर्शन करने और आत्मविश्वास को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से तैयार की गई है। अतएव आशा है कि यह समायक सामग्री विद्यार्थियों के लिए सुनियोजित कठिन परिश्रम, बेहतर समय प्रबंधन तथा निष्ठापूर्वक अध्ययन द्वारा सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचने में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित!

(यू० एन० खवाड़े)
अपर आयुक्त (शैक्षिक)

Nk=k/;;u& lgk;d& lkexh

lykgdkj

- Jh lrk"k dekj eYy] आयुक्तः, केविसं (मुख्यालयः), नव देहली
- Jh ;Œ ,uŒ [kokM+] अपर आयुक्तः, केविसं (मुख्यालयः), नव देहली

leUo;drk

- Mk- oh fot;ky{eh] संयुक्त आयुक्तः (शैक्षिकं), केविसं (मुख्यालयः), नव देहली
- Jh ih-oh- lkbZ jxkjko] उपायुक्त (शैक्षिक) केविसं (मुख्यालयः), नव देहली
- lJh vijkftrk, सहायक शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक), केविसं (मुख्यालयः), नव देहली

iLrqrdrk

- Jh ihŒ nodekj] उपायुक्तः, बेंगलूरु संभागः
- Jh fonoku vkjŒ thŒ HkVV%
- Mk- ihŒ jFk%
- MkŒ ohŒ ohŒ HkVV%
- Jherh yhuk enu%

iqujh{k.kdrk

- Jh ohjUæ dekj] केŒविŒ क्रŒ–1, फरीदाबादम्
- Jh dyk'kifr >k] केŒविŒ क्रŒ–2, हिंडन

Vkbfiix] Vkbi&lfVx ,o fMtkbfuix

eŒ fot;y{eh fiifVx oDlZ ik- fy-

बी -117, सेक्टर–5, नौएडा–201301, फोन : 0120-2421977, 2422312

ई–मेल : vpwpl.1972@gmail.com

fo"k;kuØef.kdk

- पाठ्यक्रमः परीक्षानिर्देशाश्च
- अपठितांशावबोधनम्
- रचनात्मकं कार्यम्
- अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्
- पठितांशावबोधनम्
- सामान्यः संस्कृतसाहित्यपरिचयः
- नीलनक्षा / आदर्शप्रश्नपत्रम् / उत्तरकुञ्चिका

[k.M% d vifBrka'kkocks/kue~ — v³dk% 10

- अङ्कविभाजनम्
- एकपदेन उत्तरम् — 2
- पूर्णवाक्येन उत्तरम् — 2
- सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः — 1

  कर्तृक्रियापदचयनम् — 2

  विशेषणविशेष्य / पर्याय / विलोमपदादिचयनम् — 2

  समुचितशीर्षकप्रदानम् — 2

[k.M% [k jpukRed dk;Ze~ — ¼v³dk% 15½

- अनौपचारिकपत्रम् / प्रार्थनापत्रम् — 5
- लघुकथा (शब्दसूचीसाहाय्येन, रिक्तस्थानपूर्तिमाध्यमेन) — 5
- संकेताधारितम् अनुच्छेदलेखनम्

  (चित्रमाधारीकृत्य / निर्दिष्टशब्दसूचीसाहाय्येन) — 5

[k.M% x vuqç;qä O;kdj.ke~ — ¼v³dk% 30½

- पाठाधारिताः सन्धिच्छेदाः — 6
- पाठाधारितसमस्तपदानां विग्रहाः — 6
- प्रत्ययाः (अधोलिखितप्रत्यययोगेन वाक्यसंयोजनम् / सङ्केताधारितरिक्तस्थानपूर्तिमाध्यमेन) — 5+3= 8
- कृत् – क्त, क्तवतु, क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्, तव्यत्, अनीयर्, क्तिन्, शतृ, शानच्
- तद्धित – मतुप्, इन्,ठक्,ठञ्, त्व, तल्
- अन्वितिः – कर्ताक्रिया अन्वितिः / विशेषण–विशेष्य अन्विति — 5
- उपपदविभक्तिप्रयोगः – पाठ्यपुस्तकम् आधृत्य — 5

[k.M% ?k ¼çFke% Hkkx%½ ifBrka'kkocks/kue~ — 35

- एकःगद्यांशः / एकः पद्यांशः / एकः नाट्यांशः — 15
- उधृतांशानां प्रसंग–सन्दर्भलेखनम्, कः कं प्रति कथयति / सन्दर्भग्रन्थस्य लेखकस्य च नामोल्लेखनम् — 4

- प्रदत्ते भावार्थत्रये शुद्धभावार्थचयनम्/प्रदत्तेभावार्थे रिक्तस्थानपूर्तिः 4
- उद्धृतश्लोकानाम् अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिः 4
- प्रदत्तवाक्यानाम् क्रमयोजनम् 4
- प्रदत्तपङ्क्तिषु प्रसङ्गानुसारं श्लिष्टपदानाम् अर्थलेखनम् 4

fuf'prkuk ikBkuk ukekfu

1) उत्तिष्ठत जाग्रत।
2) सूर्यः एव प्रकृतेः आधारः।
3) राष्ट्रचिन्ता गरीयसी।
4) दुर्बुद्धिः विनश्यति।
5) अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी।
6) सुधामुचोवाचः।
7) दारिद्र्ये दुर्लभं सत्त्वम्।।
8) आश्चर्यमयं विज्ञानजगत्।

[k.M% ?k ¼f}rh;% Hkkx½ lkekU;% lL—r lkfgR;frgkl% 10

- पाठ्यपुस्तके सङ्कलितपाठ्यांशानां कवीनां कृतीनां संस्कृतेन परिचयः 5
- संस्कृते गद्य–पद्य–नाटकादिविधानां मुख्यविशेषतानां परिचयः 5

[k.M~ d
vifBrka'kkocks/kue~ ¼v³~dk% 10½

¼1½

अशोकः चक्रवर्ती सम्राट् आसीत्। सः बिन्दुसारस्य योग्यः पुत्रः आसीत्। यदा सः अत्याचारिणां विनाशाय दूरं गतवान् तदा आत्मीयानां विश्वासघातेन गुरोः चाणक्यस्य मृत्युः अभवत्। गुरोः चाणक्यस्य स्वप्नः अखण्डभारतस्य प्रतिष्ठा आसीत्। स अशोके अतीव विश्वासं करोति स्म। अशोकस्य निष्ठया युद्धकौशलेन विचारशक्त्या च स अतीव प्रसन्नो भवति स्म। चाणक्यस्य सहायतया नृपः बिन्दुसारः राजकार्यं करोति स्म। अतः महामन्त्री खल्वाटकः अपि अपमानकारणात् चाणक्यस्य महान् विरोधी अभवत्। खल्वाटकः अशोकं हत्वा अशोकस्य विमातुः चारुमित्रायाः पुत्रं सुसीमं महाराजरूपेण द्रष्टुम् इच्छति स्म। किन्तु एवं न अभवत्। अन्ते अशोकः सर्वं शत्रुं हत्वा मगधस्य सम्राट् अभवत्।

¼d½ ,dinu mÙkj fy[kr & 1@2 x 4 ¾ 2

(1) महामन्त्री कः आसीत्।

(2) अशोकः कस्य पुत्रः आसीत्?

(3) अशोके कस्य विश्वासः आसीत्।

(4) सुसीमः कस्याः पुत्रः आसीत्?

¼[k½ ,dokD;u mÙkj fy[kr & 1 x 2 ¾ 2

(1) चाणक्यस्य कः स्वप्नः आसीत्?

(2) खल्वाटकः किम् इच्छति स्म?

¼x½ funs'kkuqlkj fy[kr & 1 x 4 ¾ 4

(1) "चक्रवर्ती सम्राट्" – अनयोः पदयोः किं विशेषणम्?

(2) सः अशोके विश्वासं करोतिस्म? – अस्मिन् वाक्ये किम् अव्ययपदं चित्वा लिखत।

(3) दुःखी–इत्यस्य कः विलोमः अस्मिन् अनुच्छेदे प्रयुक्तम् अस्ति?

(4) अन्ते अशोकः सर्वं शत्रुं हत्वा मगधस्य सम्राट् अभवत्–अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

¼?k½ vL; vuqPNsnL; —rs mi;qDr 'kh"kZda laL—rsu fy[krA 1 x 2 ¾ 2

¼2½

रावणः लंकायाः अधिपतिः आसीत्। सः अतीव प्रतापी आसीत्। तस्य अत्याचारेण देवाः, दानवाः, यक्षाः,नागाः च पीडिताः आसन्। सः छलेन पंचवटी–नामवनात् सीताम् अपहृत्य लंकायाः अशोकवाटिकायां स्थापितवान्। सीताम् अनेकप्रलोभनं कथयित्वा तां विवाहं कर्तुम् अकथयत्। सीता तम् अनेकैः उपदेशैः एतादृशात् कार्यात् निवृत्तं भवितुम् अवदत्। किन्तु पापाचारी रावणः सीतां पीडयित्वा तं पतिरूपेण स्वीकर्तुं वारं वारम् आदिष्टवान्। सीता भाषितवती –"रामः एव मम स्वामी, न अपरः, अहं कदापि रावणं नेच्छामि''। सीता पतिव्रता नारी आसीत्, सा लक्ष्मीः माता आसीत्। अतः रावणस्य सर्वाः चेष्टाः असफलाः अभवन्। महावीरः हनुमान् रामस्य दूतः भूत्वा सागरं तीर्त्वा लंकां प्रविश्य सीतां रामस्य कुशलसमाचारम् अकथयत्। रामः समुद्रे सेतुं बद्ध्वा लंकायां रावणं हत्वा विभीषणस्य नृपरूपेण अभिषेकं कारयित्वा सीतया सह अयोध्यां प्रत्यागतवान्।

(क) एकपदेन उत्तरं लिखत – 1/2 x 4 = 2

(1) रामः कुत्र सेतुं बद्धवान्?

(2) कः रावणं हतवान्?

(3) कः रामस्य दूतः आसीत्?

(4) लंकायाः अधिपतिः कः आसीत्?

¼[k½ ,dokD;su mÙkj fy[kr\ 1x2 ¾ 2

(1) रावणस्य अत्याचारेण के पीडिताः आसन्?

(2) सीता रावणं किं भाषितवती?

¼x½ ;FkkfunsZ'ke mÙkjr& 1x4 ¾ 4

(1) ''उपदेशैः'' – इत्यस्य विशेषणं किम्?

(2) ''राक्षसाः'' – इत्यर्थे किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(3) ''निर्गत्य'' – इत्यस्य विलोमपदं किम्?

(4) ''प्रत्यागतवान्'' – इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम्?

¼?k½ vL; vuqPNsnL; —rs mi;qä 'kh"kZda lL—rsu fy[krA 1x2 ¾ 2

¼3½

विश्वे अनेकाः भाषाः सन्ति। अनेकेषु स्थानेषु अनेकाः भाषाः भाष्यन्ते। भाषाभिः एव मानवानां भावाः प्रकाश्यन्ते। अतः भाषाणाम् अतीव महत्त्वं वर्तते। प्राचीनासु भाषासु संस्कृतम् एव अतीव महत्त्वपूर्णा भाषा अस्ति। इयं देवभाषा इति कथ्यते। देवभूम्यां भारते आर्याः अनया भाषया परस्परं कथयन्ति स्म। ते संस्कृतेन लिखन्ति स्म। संस्कृतम् एव तदाकथित–भाषा आसीत्। अतः संस्कृत भाषायां विशालं साहित्यं प्राप्यते। वेदाः चत्वारः प्राप्यन्ते, ये ज्ञान–विज्ञानस्य कोषः इति अस्ति। आदिकाव्यं रामायणं आदिकवेः वाल्मीकेः आदर्शपूर्णं महाकाव्यम् अस्ति। भगवता व्यासेन लिखितं महाभारतं ''यत्र धर्मः तत्र जयः'' इति सत्यं प्रतिपादयति। उपनिषदः अपिगभीरम् आत्मज्ञानं शिक्षयन्ति। पुराणानि अपिभक्ति माध्यमेन मुक्ति मार्गं निर्दिशन्ति। कथा–साहित्यम् अपि रमणीयकथाभिः नीतिवाणीं सूचयन्ति। अतः संस्कृतं विश्व साहित्यस्य महार्घं रत्नं विद्यते।

¼d½ ,dinsu mÙkj fy[kr & 1@2x4 ¾ 2

(1) किम् आदि काव्यम् अस्ति?

(2) महाभारतं केन लिखितम्?

(3) महार्घंरत्नं किम्?

(4) वेदाः कति सन्ति?

¼[k½ ,dokD;su mÙkj fy[kr\ 1 x 2 ¾ 2

(1) उपनिषदः किं शिक्षयन्ति?

(2) पुराणानि किं निर्दिशन्ति?

¼x½ ;FkkfunsZ'ke mÙkjr& 1x4 ¾ 4

(1) ''भाषाः'' – इत्यस्य विशेषणं किम्?

(2) ''धनम्'' – इत्यर्थे किं पर्यायपदं अत्र प्रयुक्तम्?

(3) ''पराजयः'' – इत्यस्य विलोम पदं किम्?

(4) ''प्रतिपादयति'' – इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम्?

¼?k½ vL; vuqPNsnL; —rs mi;qä 'kh"kZda lL—rsu fy[krA 1x2 ¾ 2

¼4½

समाजे यथा पुत्रस्य अधिकारः तथा कन्यायाः अपि। उभयोः पठने समानः अधिकारः वर्तते। अतः परिवारे पुत्रः पाठनीयः, पुत्री अपि समानरूपेण पाठनीया। पठनेन ज्ञानं विकसितं भवति। अनेन किम् उचितं किं च अनुचितं तस्यबोधः भवति। नारी एव समाजं निर्माति। सा ब्रह्मा इव स्रष्टा अस्ति। सा जननी भवति। सा पुत्रं पुत्रीं च पाठयति। यदि सा शिक्षिता न भवति तदा सा पाठयितुं योग्या न भवति। गृहे अनेकाः समस्याः भवन्ति। ताः समस्याः दूरं कर्तुं दक्षतायाः आवश्यकता भवति। एका पठिता नारी एव समस्यां समाधातुम् अर्हति। समाजे यदि अन्यायं भवति, तदा शिक्षिता नारी एव तस्य समाधानं कर्तुं प्रभवति। वित्तकोषे अर्थस्य आदानस्य प्रदानस्य समये अपि प्रयोगज्ञानस्य आवश्यकता भवति। चिकित्सालये अपि आपत्काले औषधप्रदाने, चिकित्सकेन सह परामर्शकाले च एटीएम्– इत्यतः धनग्रहणसमये सा सहायतां करोति।

¼d½ ,dinsu mÙkjr fy[kr & 1@2 x 4 ¾ 2

(1) उभयोः कुत्र समानः अधिकारः?

(2) पठनेन किं विकसितं भवति?

(3) का समाजं निर्माति?

(4) कीदृशी नारी समस्यां समाधातुं निपुणा भवति?

¼[k½ ,dokD;su mÙkjr fy[kr\ 1x2 ¾ 2

(1) शिक्षिता नारी कदा–कदा सहायतां करोति?

(2) ज्ञानेन किं किं बोधं भवति?

¼x½ ;FkkfunsZ'ke~ mÙkjr& 1x4 ¾ 4

(1) ''ज्ञानम्'' – इत्यस्य विशेषणं किम्?

(2) ''स्त्री'' – इत्यर्थे किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(3) ''न्यायम्'' – इत्यस्य विलोमपदं किम्?

(4) ''अर्हति'' – इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदम्?

¼?k½ vL; vuqPNsnL; —rs mi;qä 'kh"kZda lL—rsu fy[krA 1x2 = 2

[k.M% [k
jpukRed dk;Ze ¼v³dk% 15½

- अनौपचारिकं पत्रम् / प्रार्थनापत्रम् 5
- लघुकथा (शब्दसूचीसाहाय्येन, रिक्तस्थानपूर्तिमाध्यमेन) 5
- संकेताधारितम् अनुच्छेदलेखनम्
  (चित्रमाधारीकृत्य / निर्दिष्टशब्दसूचीसाहाय्येन) 5

i=y[kue~ ¼1½

शालादर्पणे छात्राणां सूचनां पूरयितुं प्राचार्यस्य अध्यापकेभ्यः पत्रम्।

बेंगलूरुतः

दिनांकः..............

................................(1) एतत्सर्वेभ्यः.............(2) सूच्यते ....(3) अद्य ....(4) समयं यावत् सर्वैः अध्यापकैः .... (5) सर्वाः सूचनाः संगणके पूरयितव्याः। छात्राणां ....(6) लेखितव्यानि। तेषां..........(6) –संख्या अपि नाम्ना सह........... (8) लेखितव्या। जन्म–तारिका अपि ....(9) लेखितव्या। सर्वाः ....(10) संगणके दातव्याः इति।

भवतः

प्राचार्यः

(सूचनाः, पंजीकरण,चतुर्वादनं, नामानि, संगणके, अध्यापकेभ्यः, छात्राणां, यत्, महाशयाः, सम्यक्तया)

i=y[kue~ ¼2½

पुत्रीं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः पूरयत

1 .... 2 .... शुभाशंसाः।

मन्ये भवती तत्र 3) .... । अत्र गृहे सर्वे 4) .... सन्ति। अत्र सर्वे जनाः भवतीं सर्वदा स्नेहेन स्मरन्ति। भवत्याः स्वास्थ्यं कथम् अस्ति इति लिखतु। भवत्याः अध्ययनं सम्यग् एव 5) .... इति मन्ये। अर्धवार्षिकी 6) .... समाप्ता न वा? 6) .... आरम्भः कदा भविष्यति इति लिखतु। शीघ्रम् अत्र आगच्छतु। अन्यत्सर्वं 8) .... अस्ति। भवत्याः 9) .... मम शुभाशिषः। भवदीयः 10) .... श्याममोहनः

lf[kH;%] d¡'kye] çpyfr] fç;oRl¡] d¡'kfyu%]jk;i¡jr%] firk] vodk'kL;] ijh{kk] d¡'kfyuh

y?kqdFkk ¼1½

एकस्मिन् ग्रामे एकस्य कृषकस्य परिवारः आसीत्। तत्र .... क्षेत्रे कार्यं करोति स्म। तस्य ....गृहस्य संचालनम् अकरोत्। तयोः...... पुत्रः, ... पुत्री अपि आस्ताम्। पुत्रः......... कुशलः, पुत्री...........निपुणा च आस्ताम्। पुत्रः भारतीय–प्रशासनिक सेवायाम्.......... भूत्वा उच्च–पदाधिकारी अभवत्। पुत्री अपि .... वृत्तिम् अलभत। कृषक–परिवारः अतीव प्रसन्नः अभवत्। एतत्सर्वं ....फलम् एव। अतः........ परिश्रमः एव साधनम् अस्ति।

dfBuifjJeL;] ØhMk;ke] lQyrk;¡] mÙkh.k%] ØhMkfoHkkx¡] ,dk] ,d%] iBu]iRuh] d"kd%

y?kqdFkk ¼2½

एका वृद्धा .... अगच्छत्। सहसा सा .... ताडिता भूमौ अपतत्। सुशीलः .... विद्यालयम् अगच्छत्। सः ... . वृद्धाम् उत्थापयत्। सुशीलः ....चिकित्सां कारयित्वा तां............ प्रति अनयत्। सा बहु .... दत्वा कृतज्ञतां ....। शिक्षकः ....कारणम् अपृच्छत्। सुशीलः सत्यम् अवदत्। अतः .... करणीयः।

¼ijksidkj%] vkf'k"k%] foyEcL;] xge] Hkwe%] o`)k;k%] Kkfirorh] ekxs] dkj;kuu] foyEcu½

y?kqdFkk ¼3½

गंगानगरे एकस्य .... निवासः अस्ति। सः .... सीवनकार्यं कृत्वा ....व्ययभारम् आवहति। सः मधुरभाषी ... . च आसीत्। तस्याः पत्नी अपि सीवनकार्ये तस्य ....करोति। पुत्रःअधुना महाविद्यालये ....पठति। तस्य ... . इच्छा चिकित्सकं भवितुम् अस्ति। सोऽपि मध्ये मध्ये.......... आनीय जनकाय ददाति। पितापि ....अनेन व्यवहारेण ....।

(पुत्रस्य,सौचिकस्य, परिवारस्य, व्यवहारकुशलः, उत्तमम्, जलपानम्, महती, अहोरात्रम्, प्रसीदति,सहायताम्)

y?kqdFkk ¼4½

अस्ति कस्मिंश्चित् .... शमीवृक्षः। तस्य लम्बमानायां .... आवासं कृत्वा .... अवसताम्। अथ कदाचित् कश्चित् शाखामृगः तत्र आयातः। दन्तवीणां वादयन् असौ शमीमूलं प्राप्य उपविष्टः। अयं तं .... तादृशं वायुना वृष्टिधारया च क्लिन्नं दृष्ट्वा चटका वदति–भो! भद्र, त्वं किमर्थं .... न करोषि? तच्छ्रुत्वा .... सकोपं तां वदति – किमर्थं त्वं मौनं न धारयसि, माम् उपहससि किल? इदानीं निजधृष्टतायाः .... अनुभव। इति कथयित्वा सः शमीवृक्षम् .... तस्याः नाशम् अकरोत्।

e¥ts"kk & आरुह्य, वानरः, शाखामृगं, शाखायां, देशे, चटकदम्पती, गृहनिर्माणं, फलम्,

शब्दसूचीसहायतया अनुच्छेदलेखनम्। (5)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

अस्याः सूक्तेः अयम् अर्थः यत् जननी अर्थात् माता, जन्मभूमिश्च अर्थात् सः देशः यत्र जनस्य जन्म भवति, एते उभे स्वर्गात् स्वर्गस्थानाद् अपि गरीयस्यौ अर्थात् गुरुतरे स्तः। लोके इदम् विश्रुतं भवति यत् स्वर्गलोके दुःखानां सर्वविधक्लेशानां च निराकरणं भवति, तत्रसर्वसुखानाम् उद्‌भवो भवति। दुःखस्थानं नरकं विहाय सर्वे जनाः सुखस्य परमोच्चं स्थानं स्वर्गं कामयते। परम् अत्र अन्यत् एवं प्रतिपादितम्। स्वर्गतः अपि द्वे महत्तरे स्तः एका जन्मदात्री जननी, अपरा च जन्मभूमिः। एताभ्यां जनः स्वर्गादपि अधिकं सुखं प्राप्नोति इति अभिप्रायः ।

'kCnlwph&foJqr] lo]l[kkuke] tUenk=h] LoxLFkkukn~] ijekPp] LFkku

JhenHkxonxhrk

संस्कृतभाषायां महर्षिवेदव्यासेन विरचितस्य महाभारते श्रीमद्‌भगवद्‌गीता दीपस्तम्भ इव स्थिता प्रतीयते। धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेतानां युयुत्सुकानां पाण्डवानां कौरवाणां च मध्ये युद्धविरतम् अर्जुनम् अभिलक्ष्य भगवतः श्रीकृष्णस्य उपदेशेन तस्य मोहम् अनश्यत्। तत्सर्वं श्रीमद्‌भगवद्‌गीतायां निबद्धम् अस्ति। अत्र कर्मयोगस्य उपदेशः वर्तते। अर्जुनस्य विषादः जीवनसंग्रामात् निवर्तकस्य जनसामान्यस्य विषादः अस्ति। कृष्णस्य उपदेशैः भगवत्कृपया विराट् प्रदर्शनेन च तस्य विषादः नष्टः। सङ्गरहितो भूत्वा कर्मफलेषु आसक्तिं त्यक्त्वा कर्माणि कुर्वन् नरः मोक्षं प्राप्नोति। अत उच्यते "असक्तः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय" इति।

'kCn lph& युद्धविरतम्, दीपस्तम्भ, श्रीकृष्णस्य, उपदेशेन, निबद्धम्, जीवनसंग्रामात्

lnkpkj%

श्रेष्ठजनानाम् आचरणम् एव सदाचारः शीलं वा कथ्यते। सताम् आचारः सदाचारः। सत्पुरुषाः शास्त्रविहितं प्रशस्तं कार्यं कुर्वते, इतरे जनाः तदेव अनुसरन्ति। शीलमेव जीवनस्य परमम् आभूषणम् अस्ति। सदाचारी जनः शिष्टः सभ्यः विनीतः विनम्रः च भवति। सः परदारेषु मातृवत् परधनेषु लोष्ठवत् सर्वभूतेषु च आत्मवत् पश्यति। वाक् संयमी भूत्वा कामक्रोधादीन् विकारान् निगृह्य कर्मसु प्रवर्तते। सदाचारस्य प्रतिपालनेन एव भगवान् श्रीरामः मर्यादा पुरुषोत्तमः इति विश्रुतः भवति। वयं तादृशं सुशीलं कामयामहे येन जगत् विनम्रं भवेत्।

'kCn lph& शास्त्रविहितं, निगृह्य, आत्मवत्, सर्वभूतेषु, मर्यादापुरुषोत्तमः, कामयामहे

[k.M x

vuç;ä 0;kdj.ke~ ¼v³d% 30½

- पाठाधारिताः सन्धिच्छेदाः 6
- पाठाधारित समस्तपदानां विग्रहाः 6
- प्रत्ययाः (अधोलिखितप्रत्यययोगेन वाक्यसंयोजनम्/सङ्केताधारितरिक्तस्थानपूर्तिमाध्यमेन) 5x3 = 8
- कृत् – क्त, क्तवतु, क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्, तव्यत्, अनीयर्, क्तिन्, शतृ, शानच्
- तद्धित – मतुप्, इन्, ठक्, ठञ्, त्व, तल्
- अन्वितिः – कर्ताक्रिया अन्वितिः / विशेषण–विशेष्य अन्वितिः 5
- उपपदविभक्तिप्रयोगः – पाठ्यपुस्तकम् आधृत्य 5

[k.M ?k ¼çFke% Hkkx%½

ifBrk'kocks/kue~ ¼v³d% 35 ½

- एकः गद्यांशः/एकः पद्यांशः/एकः नाट्यांशः 15
- उद्धृतांशानां प्रसंग–सन्दर्भ–लेखनम् कः कं प्रति कथयति/सन्दर्भग्रन्थस्य लेखकस्य च नामोल्लेखनम् 4
- प्रदत्ते भावार्थत्रये शुद्धभावार्थचयनम्/प्रदत्ते भावार्थे रिक्तस्थान पूर्तिः 4
- उद्धृत–श्लोकानाम् अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिः 4
- प्रदत्तवाक्यानाम् क्रमयोजनम् 4
- प्रदत्त–पङ्क्तिषु प्रसङ्गानुसारं श्लिष्टपदानाम् अर्थलेखनम् 4

iFke% ikB%
mfÙk"Br tkxr

1½ r'.kkfu Hkfe#nda okDprFkh p lu'rkA
,rkU;fi lrka xgs ukfPN|Urs dnkpuAA1AA

व्याकरणांशाः ।

ikBxrkuka 'yksdkuke~ vUo;% r| ikBs ,o çnÙk% l% iBuh;%A

1. विपरीतार्थकानि

भूमिः	•	आकाशः
उदकम्	•	अग्निः
सूनृता	•	कठोरा
सताम्	•	दुर्जनानाम्/असताम्

2. विशेषणम् — विशेष्यम्

सूनृता (चतुर्थी) — वाक्

3. कर्ता — क्रिया

एतानि — उच्छिद्यन्ते

4. अव्ययानि

अपि — कदाचन — न — च

2- vfnHk% 'kq/;fUr xk=kf.k cqf)% Kkusu 'kq/;frA
vfgalk; p HkwrkRek euq% lR;su 'kq/;frAA2AA

1. विलोमपदानि

शुध्यन्ति	•	न शुध्यन्ति
ज्ञानेन	•	अज्ञानेन
अहिंसया	•	हिंसया

2. समासपदानि

अहिंसया	=	न हिंसया	(नञ्तत्पुरुषः)
भूतात्मा	=	भूतानाम् आत्मा	(षष्ठी तत्पुरुषः)

3. प्रकृतिः — प्रत्ययः

अहिंसया = अहिंस् — टाप् — (तृतीया एकवचनम्)

4. कर्तृक्रिया अन्वितिः

अद्भिः गात्राणि .... । (शुध्यति/शुध्यन्ति/शुध्यामि)

ज्ञानेन बुद्धिः .... । (शुध्यसि/शुध्यन्ति/शुध्यति)

मनः सत्येन ------------------------। (शुध्यथ / शुध्यतः / शुध्यति)

(1. शुध्यन्ति 2. शुध्यति 3. शुध्यति)

5. एकपदेन उत्तरं लिखत –
   1. किं सत्येन शुध्यति?
   2. काभिः गात्राणि शुध्यन्ति?
   3. बुद्धिः केन शुध्यति?
   4. भूतात्मा कया शुध्यति?
   5. मनः केन शुध्यति?
   6. अहिंसया कः शुध्यति?
6. यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत–
   1. शुध्यन्ति इति क्रियायाः कः कर्ता?
   2. मानसम् इत्यर्थे श्लोके किं पदमस्ति?
   3. अयं श्लोकः कस्मात् ग्रन्थात्स्वीकृतः? (मनुस्मृतेः / बोधायन धर्मसूत्रम्)
   4. 'मिथ्यया' अस्य किं विलोमपदं श्लोके अस्ति?
   5. श्लोके विद्यमानम् एकम् अव्ययं चित्वा लिखत–
   6. 'अहिंसया' अत्र --------------विभक्तिः विद्यते। (पञ्चमी / षष्ठी / तृतीया)

3- lR;eo t;fr ukur̀ra lR;su iUFkk% forrks nso;kuk%A
;suk Øeu̥R;"k;ks áklrdkek% ;= rRlR;L; ije fu/kkue~AA

1. विलोमपदानि

सत्यम्	•	असत्यम्
जयति	•	पराजयते
अनृतम्	•	ऋतम्
विततः	•	संकीर्णः
परमम्	•	सामान्यम्

2. समासपदानि

अनृतम्	=	न ऋतम्	(नञ् तत्पुरुषसमासः)
आप्तकामाः	=	आप्तकामःयैःते	(समानाधिकरणबहुव्रीहिः)

3. विशेषणं — विशेष्यम्

विशेषणं	विशेष्यम्
विततः	पन्थाः
आप्तकामाः	ऋषयः
परमं	निधानम्

4. कर्तृ – क्रिया – अन्वितिः

कर्ता	क्रिया
सत्यम्	जयति
ऋषयः	आक्रमन्ति

5. अव्ययपदानि

न हि यत्र

6. सर्वनामपदानि

येन तत्

7. एकपदेन उत्तरं लिखत–

1. किं सर्वदा जयति?
2. कः सत्येन विततः विद्यते?
3. कीदृशाः ऋषयः आक्रमन्ति?
4. कस्य तत्परमं निधानम् अस्ति?
5. के च ते आक्रमन्ति?
6. किं न जयति?

8. यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत –

1. आक्रमन्ति इति क्रियायाः कः कर्ता?
2. लब्धेच्छाः इत्यर्थे श्लोके किं पदमस्ति?
3. ऋषयः अस्य किं विशेषणं श्लोके अस्ति?

9. अयं श्लोकःकस्मात् उपनिषदःस्वीकृतः? (मुण्डकोपनिषदः)

4- ;Lr| lokf.k Hkrkfu vkReU;okui';frA
lo:Hkr"k| pkReku| rrk u fotqxqlrAA

1. समासपदानि

सर्वभूतेषु	=	सर्वेषु भूतेषु	(कर्मधारयः)
		अथवा	
	=	सर्वाणि च तानि भूतानि तेषु	(कर्मधारयः)

2. विशेषणं — विशेष्यम्

विशेषणं	विशेष्यम्
सर्वाणि	भूतानि
सर्वेषु	भूतेषु

3. कर्तृ–क्रिया अन्वितिः

कर्ता	क्रिया

यः (नरः)	अनुपश्यति
नरः (सः)	विजुगुप्सते

4. सर्वनामपदानि

यः	सर्वाणि

5. अव्ययानि

तु एव, च, ततः, न

6. उचितक्रियापदानि योजयित्वा वाक्यानि पूरयत–

यःसर्वाणिभूतानि–––––––––––––– (अनुपश्यन्ति / अनुपश्यामि / अनुपश्यति)

ततः न सः –––––––––––––– (विजुगुप्सन्ते / विजुगुप्ससि / विजुगुप्सते)

वयं सर्वेषु भूतेषु आत्मनः –––––––––––––– (पश्यन्ति / पश्यामः / पश्यथ,

5- mfÙk"Br tkxr çkI; ojkfUuck/krA

{kjL; /kkjk fuf'krk nqjR;;k nqxZ iFkLrRdo;ks onfUrAA5AA

1. विलोमपदानि

वरान्	•	सामान्यान्
निशिता	•	अतीक्ष्णा
दुरत्यया	•	सुखेन गम्या
दुर्गम्	•	सुगम्

2. समासपदम्

दुरत्यया	=	दुःखेन गन्तुं शक्या

3. प्रकृतिः प्रत्ययः च

शब्दाः		प्रकृतिः		प्रत्ययः
प्राप्य	=	प्र+आप्	+	ल्यप्
दुरत्यया	=	दुरत्यय	+	टाप्

6. विशेषणम् विशेष्यम्

विशेषणम्	विशेष्यम्
निशिता	धारा
दुर्गम्	पथः

4. कर्तृक्रिया अन्वितिः

कर्ता	क्रिया	
यूयम् (मानवाः)	उत्तिष्ठत / जाग्रत	(लोट्, मध्यमपुरुषः, बहुवचनम्)
यूयम् (नराः)	निबोधत	(लोट् मध्यमपुरुषः बहुवचनम्,
कवयः	वदन्ति।	(लट् प्रथमपुरुषः बहुवचनम्)

5. अव्ययानि

प्राप्य

6- ,dinu mÙkj fy[kr

1. भोः जनाः यूयं किं कुरुत?
2. वरान् प्राप्य किं कुरुत?
3. कस्य धारा निशिता?
4. क्षुरस्य धारा कीदृशी?
5. पथः दुर्गम् इति के वदन्ति?
6. कवयः किं दुर्गम् इति वदन्ति?
7. नराः कान् प्राप्य निबोधत?

उत्तराणि – 1. उत्तिष्ठत 2. निबोधत 3. क्षुरस्य 4. निशिता 5. कवयः 6. पथः (आर्षप्रयोगः) 7. वरान्

7- ;Fkkfuns'ke mÙkj fy[kr&

1.	उत्तिष्ठत इति क्रियायाः कः कर्ता?	यूयम्
2.	महापुरुषान् इत्यर्थे श्लोके किं पदमस्ति?	कवयः
3.	निशिता इत्यस्य किं विशेषणम्?	धारा
4.	कवयः इति कर्तुः का क्रिया?	वदन्ति

f}rh; ikB%

l;% ,o iqdr% vk/kkj%

dfodk0;ifjp;%&

अयं पाठः च आधुनिककविना अम्बिकादत्तेन विरचित शिवराजविजय– नाम्नः गद्यकाव्यस्य प्रथमाध्यायात् सङ्कलितः।

- कविः – अम्बिकादत्तव्यासः
- देशः – जयपुरम्
- कालः – नवदशशताब्दी
- काव्यम् – शिवराजविजयः

0;kdj.kk'k%

1- lekukFkZdk% &

अरुणः	=	सूर्यः
प्रकाशः	=	दीप्तिः
मरीचिमालिनः	=	रवेः
खेचराः	=	नक्षत्राणि
कुण्डलम्	=	अलङ्कारः
आखण्डलः	=	इन्द्रः
प्रेयान्	=	प्रियकरः
पुण्डरीकम्	=	कमलम्
कोकलोकः	=	चक्रवाकसमूहस्य
अवलम्बः	=	आधारः
रोलम्बः	=	भ्रमरः
कदम्बः	=	समूहः
सूत्रधारः	=	नायकः (निर्देशकः)
इनः	=	स्वामी
परमेष्ठिनः	=	ब्रह्मणः
परार्धसङ्ख्या	=	अन्तिमा सङ्ख्या
वन्दिनः	=	स्तुतिपाठकाः
गायति	=	स्तौति

2- foijhrkFkZdkfu

प्रकाशः	•	अन्धकारः
अङ्गीकरोति	•	तिरस्करोति
उत्तरम्	•	दक्षिणम्
वन्दिनः	•	निन्दकाः
गायति	•	निन्दति

3- lfU/kinkfu&

अरुणएषः	=	अरुणः . एषः	=	विसर्गलोपः		
एषप्रकाशः	=	एषः. प्रकाशः	=	विसर्गलोपः		
मणिराकाशमण्डलस्य	=	मणिः . आकाशमण्डलस्य	=	विसर्गः (रूत्व)		
अवलम्बोरोलम्बः	=	अवलम्बः	+ रोलम्बः	=	विसर्गः	
इनश्च	=	इनः	+ च	=	विसर्गः / श्चुत्वम्	
चायनम्	=	च	+ अयनम्	=	सवर्णदीर्घः	
धन्यएषः	=	धन्यः	+ एषः =	विसर्गलोपः		

4. समासपदानि

मरीचिमालिनः	=	मरीचयः एव मालाः येषां ते	=	बहुव्रीहिः
खेचरचक्रस्य	=	खेचराणां चक्रस्य	=	षष्ठीतत्पुरुषः
आखण्डलदिशः	=	आखण्डलस्य दिशः	=	षष्ठीतत्पुरुषः
ब्रह्माण्डभाण्डस्य	=	ब्रह्माण्डम् एव भाण्डं यस्य सः	=	बहुव्रीहिः
पुण्डरीकपटलस्य	=	पुण्डरीकाणां पटलस्य	=	षष्ठीतत्पुरुषः
कोकलोकस्य	=	कोकानां लोकस्य	=	षष्ठीतत्पुरुषः
रोलम्बकदम्बस्य	=	रोलम्बानां कदम्बस्य	=	षष्ठीतत्पुरुषः
सूत्रधारः	=	सूत्रं धारयति इति	=	उपपदतत्पुरुषः
सर्वव्यवहारस्य	=	सर्वेषां व्यवहारस्य	=	षष्ठीतत्पुरुषः
अहोरात्रम्	=	अहः च रात्रिः च एतयोः समाहारः	=	द्वन्द्वः
युगभेदाः	=	युगानां भेदाः	=	षष्ठीतत्पुरुषः
परार्ध सङ्ख्या	=	परार्ध इति सङ्ख्या	=	कर्मधारयः
सहस्ररश्मिः	=	सहस्राः रश्मयः यस्मिन् सः	=	बहुव्रीहिः

5- ç—fr% çR;;% p

शब्दाः	प्रकृतिः		प्रत्ययः
निराधारा–	निराधार	+	टाप्
प्रणमन्	प्र + नम्	+	शतृ
आश्रित्य	आ + श्री	+	ल्यप्
परमेष्ठिनः	परमेष्ठ	+	इन्
वन्दिनः	वन्द्	+	इन्
गायत्री	गायत्र	+	ङीप्

6- fo'k"k.ke fo'k";e

मरीचिमालिनः	भगवतः
षण्णाम्	ऋतूनाम्
दक्षिणम्	अयनम्

उत्तरं	अयनम्
वन्दिनः	वेदाः
उदेष्यन्तम्	भास्वन्तम्
प्रणम्य	रामः
गुरुसेवनपटुः	वटुः
सहस्ररश्मिः	सूर्यः

7. प्रसङ्गानुसारम् अर्थाः

vk[k.Mydिशः	–	मण्डलः	bUæ%	प्रचण्डः	शाण्डिल्यः
ç;ku	–	प्रायः	क्रियात्	fç;%	क्रोधिनः
i.Mjhdkuk%	–	भण्डारः	माण्डलिकः	deykfu	चाण्डालः
jkyEcdnEcL;	–	Hkejk%	आलम्बनम्	विलम्बः	स्तम्भनम्
jkyEcdnEcL;	–	बिम्बस्य	अवलम्बनस्य	शम्भ	legL;
दिनस्य bu%	–	मनः	श्वानः	Lokeh	सू
परमेष्ठिनः	–	श्रेष्ठिनः	विष्णोः	शिवस्य	fo/kkr%
वेदवन्दिनः	–	LrfrikBdk%	बन्दिनः	बान्धवाः	चन्दनम्

vuPNsn /kkfjrk ç'uk%

अरुण ....

....इनश्चदिनस्य।

I] ,dinsu mÙkjr fy[kr &

1. कस्यां दिशि भगवान् सूर्यः उदेति?
2. केषां च अयं सूर्यः प्रेयान् भवति?
3, आखण्डलदिशः सूर्यः किं भवति?
4. सूर्यः कोकलोकस्य कं दूरीकरोति?

i] पूर्वस्याम् ii] पुण्डरीकाणां iii] कुण्डलम् iv] शोकं

II] funs'kkuqlkjeÙkjr fy[kr &

1. fnf'k इति पदस्य किं विशेषणम् अनुच्छेदे वर्तते?
2. bUæ% इत्यर्थे अनुच्छेदे किं पदम्?
3, vU/kdkj% अस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?
4. ,"k Hkxoku अत्र एषः इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

i] पूर्वस्याम् ii] आखण्डलः iii] दीपकः iv] सूर्याय

r`rh;%ikB%
jk"Vfpûrk xjh;lh

0;kdj.kka'kk%

1- lekukFkZdk%

प्रासादः	=	भवनम्
आकाशम्	=	गगनम्
वः	=	युष्मान्
नेपथ्ये	=	पृष्ठतः
स्वगतम्	=	मनसि
शनैः	=	सावधानम्
उपलभेदकम्	=	त्रोटकम्
प्रस्तरः	=	पाषाणः
स्तूपः	=	स्तम्भः
वृषलः (श्रेष्ठः)	=	चन्द्रगुप्तः
अध्यास्ते	=	उपविशति
उपसृत्य	=	समीपमागत्य
पाणौ	=	हस्ते
स्मितंकृत्वा	=	हसित्वा
सक्रोधम्	=	सरोषम्
अवधार्यताम्	=	अवगम्यताम् (अवबुध्यताम्)
महीयसा	=	बलिष्ठेन
अभियोक्तुम्	=	आक्रमितुम्
उद्यतः	=	सिद्धः
गरीयसी	=	श्रेष्ठा
उत्सवाः	=	पर्वाणि
अमात्यः	=	मन्त्री, सचिवः

2] lfU/kinkfu

उल्लङ्घनम्	=	उत् + लङ्घनम्	(लकारादेशः)
सङ्कलितः	=	सं + कलितः	(परसवर्णः)
प्रासादाधिकृतः	=	प्रासाद + अधिकृताः	(सवर्णदीर्घः)
महोत्सवः	=	महा + उत्सवः	(गुणः)
अलङ्कुर्वन्तु	=	अलं + कुर्वन्तु	(परसवर्णः)
अस्मद्वचनात्	=	अस्मत् + वचनात्	(जश्त्वम्)
चक्षुषोविषयः	=	चक्षुषः + विषयः	(विसर्गः)

राजमन्त्रिणोविभूतिः	=	राजमन्त्रिणः + विभूतिः	(विसर्गः)
स्वप्नेऽपि	=	स्वप्ने + अपि	(पूर्वरूप)
राक्षसोपदेशप्रवणः	=	राक्षस + उपदेशप्रवणः	(गुणः)
सोऽयम्	=	सः + अयम्	(विसर्गः)

3- lekl foxzg%

प्रजाधनस्य	=	प्रजानां धनं तस्य	=	षष्ठीतत्पुरुषः
कौमुदीमहोत्सवः	=	कौमुद्याः महोत्सवः	=	षष्ठीतत्पुरुषः
कुसुमपुरम्	=	कुसुमम् इतिपुरम् / कुसुमानां पुरम्	=	तत्पुरुषः
दुराराध्या	=	दुःखेन आराधयितुं शक्या या सा	=	बहुव्रीहिः
राजलक्ष्मीः	=	राज्ञःलक्ष्मीः	=	षष्ठीतत्पुरुषः
सक्रोधम्	=	क्रोधेन सहितम्	=	अव्ययीभावः
आसनस्थः	=	आसने तिष्ठति इति	=	उपपदतत्पुरुषः
जीविकामः	=	जीवितुं कामः यस्य सः	=	बहुव्रीहिः
स्वभवनगतः	=	स्वभवनं गतः	=	तत्पुरुषः
दुरात्मा	=	दुष्टःआत्मा यस्य सः	=	बहुव्रीहिः
दुर्व्यसनात्	=	दुष्टं व्यसनं यस्मिन् सः तस्मात्	=	बहुव्रीहिः
उपलभेदकान्	=	उपलानां भेदकम् तान्	=	तत्पुरुषः
प्रस्तरखण्डम्	=	प्रस्तराणांखण्डम्	=	षष्ठीतत्पुरुषः
निस्पृहत्यागिभिः	=	निस्पृहाः च ते त्यागिनः	=	कर्मधारयः
आर्यप्रसादात्	=	आर्यस्य प्रसादात्	=	षष्ठीतत्पुरुषः
निष्प्रयोजनम्	=	निर्गतं प्रयोजनं यस्मात्तत्	=	बहुव्रीहिः
निष्प्रयोजना	=	निर्गतं प्रयोजनं यस्याःसा	=	बहुव्रीहिः
निरुद्धचेष्टस्य	=	निरुद्धा चेष्टा यस्य सः (तस्य)	=	बहुव्रीहिः
दुर्गसंस्कारः	=	दुर्गाणां संस्कारः	=	तत्पुरुषः
राष्ट्रचिन्ता	=	राष्ट्रस्य चिन्ता	=	तत्पुरुषः

4- 'kCnk% ç—fr% çR;;% p

शब्दाः	प्रकृतिः	प्रत्ययः
सङ्कलितः	सम् + कल्	क्त
कञ्चुकी	कञ्चुक +	इन्
परिक्रम्य	परि + क्रम्	ल्यप्
अतिरमणीयम्	अति + रम्	अनीयर्
अवलोकयितुम्	अव + लोक्	णिच + तुमुन्
आरुह्य	आ + रुह्	ल्यप्
प्रारब्धः	प्र + आ + रभ्	क्त

प्रतिषिद्धः	प्रति + षिद्	क्त
विज्ञापयितुम्	वि + ज्ञा	णिच् + तुमुन्
उपविश्य	उप + विश्	ल्यप्
द्रष्टुम्	दृश्	तुमुन्
निष्क्रान्तः	निस् + क्रम्	क्त
नाटयन्	नाटय	शतृ
बद्ध्वा	बन्ध्	कत्वा
अवलोक्य	अव + लोक्	ल्यप्
अतिनमितः	अति + नम्	क्त
जीर्णाः	जृ	क्त
निपत्य	नि + पत्	ल्यप्
प्रणम्य	प्र + नम्	ल्यप्
बाधा	बाध	टाप्
अवलोकितम्	अव + लोक्	तुमुन्
उपसृत्य	उप + सृ	ल्यप्
उत्थाय	उत् + स्था	ल्यप्
गृहीत्वा	ग्रह +	क्त्वा
अनुभूय	अनु + भू	ल्यप्
आहूताः	आ + ह्वे	क्त
अधुकारिणः	अधिकार	इन्
पालनीया	पाल्	अनीयर्
परिवृतः	परि + वृ	क्त
अभियोक्तुम्	अभि + युज्	तुमुन्
प्रारब्धव्यः	प्र + आ + रभ्	तव्यत्

5- fo'k"k.k — fo'k";e

प्रासादाधिकृताः	पुरुषाः
रमणीयं	कुसुमपुरम्
महत्	कष्टदायकम्
दुराराध्या	राजलक्ष्मीः
आघोषितः	कौमुदीमहोत्सवः
प्रारब्धः	कौमुदीमहोत्सवः
आसनस्थः	चाणक्यः
स्वभवनगतः	
दुरात्मा	राक्षसः

उपलभेदकं	प्रस्तरखण्डम्
शुष्यमाणैः	समिद्भिः
अतिनमितः	छदिप्रान्तः
जीर्णाः	भित्तयः
निस्पृहत्यागिभिः	जनैः
कोपितः	वृषलः
निष्प्रयोजना	प्रवृत्तिः
अनभियुक्तानां	राज्ञाम्
प्रारब्धव्यः	दुर्गसंस्कारः
गरीयसी	राष्ट्रचिन्ता

6- çl ³xkuqlkjeFkZ fy[kr &

1. राजा Loxre~ वदति।
   स्वागतम्
   अनुगतम्
   eufl
2. गोमयानाम् उपल Hksnde~
   विच्छेदकम्
   =kVde~
   बोधकम्
3. किं o"kyः मां द्रष्टुम् इच्छति?
   वृषभः
   विशालः
   pUæxqIrः @ jktlsJ"Bः
4. सिंहासनम् v/;kLrs वृषलः
   अधिशेते
   mifo'kfr
   आशास्ते
5. mikyC/kq तर्हि वयमाहूताः
   उपलब्धुम्
   mignfLrqe~
   प्रशंसितुम्
6. दर्भाणां Lrwiः।
   स्तम्भः
   jkf'kः
   अपूपः

6- laokn ifBRok ç'ukukaa mÙkjkf.k fy[kr & çFkeः laoknःA

jktk& (स्वगतम्) अहो राज्यं ....

.... d¥pqdh& अथ प्रतिषिद्धः कौमुदीमहोत्सवः।

d- ,dinsu iw.kZokD;su ok mÙkjr fy[kr &

i] कीदृशस्य नृपस्य–ते राज्यं कष्टदायकम्?
   /keZofÙkijdL;
ii] राज्ञः वचनात् कः उत्सवः कुसुमपुरे आघोषितः आसीत्?
   dkSenhegksRloः
iii] का दुराराध्या इति राजा अवदत्?
   jkty{ehः

iv] राजा चन्द्रगुप्तः प्रासादं कथम् आरोहेत्?

'kuS%

v] कुत्र कौमुदीमहोत्सवः आघोषितः आसीत्?

dqlqeiqj

vi] किं तत् महाराजस्य कृते कष्टदायकं भवति?

jkT;e~

[k- funs'kkuqlkje~ mÙkjr fy[kr &

vii] प्रकाशम् अस्य किं विलोम पदं संवादे अस्ति?

viii] राजलक्ष्मीः अस्य किं विशेषणपदम्?

ix] अथ अस्मद्वचनात् अत्र अस्मद् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

x] आरोहतु इति क्रियायाः कः कर्ता?

xi] शनैः अस्य पर्यायवाचकं कोष्टकात् चित्वा लिखत – (क्षिप्रम्/अमन्दम्/उच्चैः)

(क्रमशः उत्तराणि :– स्वगतम् दुराराध्या महाराजाय राजा मन्दम्,

f}rh;% laokn%

राजा – आर्य! आचार्यचाणक्यं द्रष्टुम् इच्छामि। ....

.... आर्यं द्रष्टुम् इच्छामि इति।

d- ,dinu iz.kokD;u ok mÙkjr fy[kr &

राजा कं द्रष्टुम् इच्छति?	आचार्यं चाणक्यम्
चाणक्येन सह कः स्पर्धते?	राक्षसः
कञ्चुकी कस्य गृहं प्रविशति?	चाणक्यस्य
शिष्यैः केषां स्तूपः आनीतः?	दर्भाणाम्
राक्षसः कस्मात् रमेत्?	दुर्व्यसनात्
काभिः अतिनमितः छदिप्रान्तः?	समिद्भिः
कीदृशैः जनैः राजा तृणवत् मन्यते?	निस्पृहत्यागिभिः
राजा चन्द्रगुप्तः आचार्यं कथं प्रणमति?	शिरसा

[k- funs'kkuqlkje~ mÙkjr fy[kr &

- çfo"V% अस्य किं विलोमपदम् अनुवादे वर्तते?

  निष्क्रान्तः

- lfefnHk% अस्य किं विशेषण पदं संवादे अस्ति?

  शुष्यमाणैः

- lEir~ इत्यर्थे संवादे किं पदमस्ति?

  विभूतिः

- ,dfLeu~ dk.ks इत्यर्थे संवादे किं पदमस्ति?

  इतः

- foKki;fr इति क्रियायाः कः कर्ता?

  चन्द्रगुप्तः

rrh;% lokn%

चाणक्यः – अये! सिंहासनम् अध्यास्ते वृषलः ....

.... गुरोः आज्ञा पालनीया।

1½ ,dinu i.kokD;su ok mÙkj fy[kr &

• शिष्येण कस्य आज्ञा पालनीया?	गुरोः
• प्रयोजनं विना कैः न आहूयन्ते अधिकारिणः?	प्रभुभिः
• आर्यस्य दर्शनेन राजा कम् अनुग्रहीतुम् इच्छति?	आत्मानम्
• चन्द्रगुप्तः कयोः उपरि पतति?	पादयोः
• राजा चन्द्रगुप्तः कस्यानुग्रहेण सर्वं अलभत –	चाणक्यस्य
• कस्य दर्शनेन राजा आत्मानम् अनुग्रहीतुम् इच्छति?	चाणक्यस्य
• केन गुरोः आज्ञा पालनीया?	शिष्येण

2½ funsZ'kkuqlkje~ mÙkja fy[kr

• प्रणमति इति क्रियायाः कः कर्ता?	चन्द्रगुप्तः
• आर्य प्रसादात् अत्र 'आर्यः' अस्य पदस्य कः अर्थः?	चाणक्याय
• प्रहस्य इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?	स्मितं कृत्वा
• पालनीया अस्य पदस्य किं विशेष्यमत्र प्रयुक्तम्?	आज्ञा
• किमत्र वयम् आहूताः अत्र वयम् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?	चाणक्याय

AA nj–f"V% QyçnkAA

0;kdj.kk'kk%

1- lekukFkZdk% 'kCnk%&

जलाशये	=	सरोवरे
मत्स्याः	=	मीनाः / जलचराः
ह्रदः	=	सरः / तडागः
आहारवृत्तिः	=	भोजनव्यवस्था
संवृत्तः	=	सम्पन्नः
कुलिशम्	=	वज्रायुधम्
अभिहितम्	=	उक्तम्
निकटम्	=	समीपम्
देहभङ्गं	=	मरणम्
विहस्य	=	हसित्वा
उवाच	=	अकथयत्
दैवहतम्	=	भाग्यहीनम्
प्रतिभाति	=	दृश्यते
सुखावहा	=	सुखदायिनी

2- foykseinkfu

प्रभाते	•	सायङ्काले
रात्रौ	•	दिने
निकटम्	•	दूरम्
बलिनः	•	दुर्बलिनः / बलहीनः
युक्तम्	•	वियुक्तम्
विद्वांसः	•	मूर्खाः
उच्चैः	•	नीचैः
विहस्य	•	रुदित्वा
क्षयः	•	अक्षयः
सुरक्षितम्	•	अरक्षितम्
अनाथः	•	सनाथः
निर्मत्स्यताम्	•	समत्स्यताम्

3- lfU/kinkfu

प्रत्युत्पन्नमतिः	=	प्रति + उत्पन्नमतिः	(यण्)
कस्मिंश्चित्	=	कस्मिन् + चित्	(अनुस्वारः)
बहुमत्स्योऽयं ह्रदः	=	बहुमत्स्यः + अयम्	(विसर्गः)

सञ्जाता	=	सं + जातः	(परसवर्णः)
कुलिशपातोपमम्	=	कुलिशपात + उपमम्	(गुणः)
रात्रावपि	=	रात्रौ + अपि	(अयवादिः)
अशक्तैर्बलिनः	=	असक्तैः + बलिनः	(विसर्गः)
गतिर्भवेत्	=	गतिः + भवेत्	(विसर्गः)
यद्भविष्यः	=	यत् + भविष्यः	(जश्त्वम्)
वाङ्मात्रेणापि	=	वाक् + मात्रेण + अपि	(अनुनासिकः / सवर्ण दीर्घः)
जीवत्यनाथोऽपि	=	जीवति + अनाथः + अपि	(यण् पूर्वरूपसन्धिः)
अनाथोऽपि	=	अनाथः + अपि	(विसर्गः)
जालैस्तम्	=	जालैः + तम्	(विसर्गः)
जलाशयम्	=	जल + आशयम्	(सवर्णदीर्घः)

4- lekLinkfu foxzgokD;kfu p

अनागतविधाता	=	न आगत विधाता	नञ् तत्पुरुषः
मत्स्यजीविभिः	=	मत्स्याः जीवाः येषां ते	बहुव्रीहिः
बहिमत्स्यः	=	बहवःमत्स्याः यस्मिन् सः	बहुव्रीहिः
आहारवृत्तिः	=	आहारस्य वृत्तिः	षष्ठीतत्पुरुषः
सन्ध्यासमयः	=	सन्ध्यायाः समयः	षष्ठीतत्पुरुषः
मस्त्यसङ्क्षयम्	=	मत्स्यानां सङ्क्षयम्	षष्ठीतत्पुरुषः
अरक्षितम्	=	न रक्षितम्	नञ् तत्पुरुषः
दैव रक्षितम्	=	दैवेन रक्षितम्	तृतीयातत्पुरुषः
दैवहतम्	=	दैवेन हतम्	तृतीयातत्पुरुषः
अनाथः	=	न विद्यते नाथः यस्य सः	बहुव्रीहिः
कृतप्रयत्नः	=	कृतः प्रयत्नः येन सः	बहुव्रीहिः
प्रत्युत्पन्नमतिः	=	प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः	बहुव्रीहिः
निर्मत्स्यताम्	=	निर्गताः मत्स्याः यस्मात् ताम्	बहुव्रीहिः
आत्मरक्षां	=	आत्मनः रक्षाम्	बहुव्रीहिः
फलप्रदा	=	फलं प्रददाति इति	उपपदतत्पुरुषः

5- çÑfr% çR;;% p

शब्दाः		प्रकृतिः		प्रत्ययः
फलप्रदा	=	फलप्रद	+	टाप्
सफलता	=	सफल	+	तल् (ता)
तात्कालिकम्	=	तत्काल	+	ठक् (इक्)
गच्छद्भिः	=	गम्	+	शतृ (तृ बहु)
सञ्जाता	=	सम्	+	जन् + क्त

आकर्ण्य	=	आकर्ण्	+	ल्यप्
श्रुतम्	=	श्रु	+	क्त
अभिहितम्	=	अभि+धा	+	क्त (धा इत्यस्य हि आदेशः)
बलिनः	=	बल	+	इन्
आश्रितव्यः	=	आ+श्री	+	तव्यत्
मत्स्यजीविनः	=	मत्स्यजीव	+	इन्
अवस्थातुम्	=	अवस्था	+	तुमुन्
विहस्य	=	विहस्	+	ल्यप्
त्यक्तुं	=	त्यज्	+	तुमुन्
विसर्जितः	=	विसर्ज	+	क्तः
कर्तव्यम्	=	कृ	+	तव्यत्
निष्क्रान्तौ	=	निस्क्रम्	+	क्त
आलोड्य	=	आलोड्	+	ल्यप्
निर्मत्स्यता	=	निर्मत्स्य	+	तल्

6- fo'ks"k.k fo'ks";e

• गच्छद्भिः	मत्स्यजीविभिः
• महुमत्स्यः	ह्रदः
• कुलिशपातोपमं	वचः
• बलिनः	शत्रोः
• आश्रितव्यः	दुर्गः
• अन्या	गतिः
• कुलक्षयं	देहभङ्गम्
• पितृपितामहादिकं	अनाथः
• विसर्जितः	सरः
• कृतप्रयत्नः	नरः

7- çl³xkuqlkjeFkZ%

क. बहुमत्स्यः अयं ân%।
हृदयम् आह्लादम् सरः

ख. vkgkjofÙk% सञ्जाता।
आहारस्य जीवनम् Hkk tuçcU/k% उद्योगः

ग. dfy'kपातोपमं वचः
otk;/ke~ कलुषम् बालिशम्

घ. मत्स्यजीविभिः vfHkfgre~।
अतिहितम् Hkkf"kre~ परहितम्

ङ. निष्क्रान्तौ ifjtuu सह।
बहुजनेन पुरजनेन cU/kfHk%

8- vuPNsn ifBRok ç'ukuke mÙkjkf.k fy[kr &

कस्मिंश्चित्जलाशये ....

.... ततः प्रभाते अत्र आगन्तव्यम् इति निश्चयः।

1- ,dinu mÙkjr fy[kr

अ) मत्स्याः कुत्र निवसन्ति स्म? जलाशये

आ) इदानीं कःसंवृत्तः? सन्ध्यासमयः

इ) ह्रदः कीदृशः अस्ति? बहुमत्स्यः

ई) जलाशयं दृष्ट्वा कैः उक्तम्? मत्स्यजीविभिः

उ) कदा आगन्तव्यम् इति निश्चयं कृत्वा ते गच्छन्ति? प्रभाते

ऊ) जलाशये के निवसन्ति स्म? मत्स्याः

2- funs'kkuqlkje mÙkjr fy[kr &

1. çfrolfUr स्म इति क्रियायाः कः कर्ता?
2. मत्स्यजीविभिः अस्य किं विशेषणमत्र प्रयुक्तम्?
3. तडागः इत्यर्थे अनुच्छेदे किं पदं प्रयुक्तम्?
4. समाप्ता अस्य किं विलोमपदम् अनुच्छेदे अस्ति?

9- bekfu okD;kfu d% d çfronfr bfr fy[kr &

lUnHkZxzUFk% & i¥prU=e ikBL;uke & nj–f"V% Qyçnk

1. अहो! बहुमत्स्योऽयं ह्रदः न कदापि अस्माभिः अन्वेषितः।

मत्स्यजीविनः परस्परं वदन्ति

2. तद्रात्रावपि गम्यताम् अन्यत् सरः।

अनागतविधाता मत्स्यान् (मित्राणि)

3. आयुः क्षयोऽस्ति चेत् अन्यत्र गतानाम् अपि मृत्युः निश्चितः एव।

यद्भविष्यः स्वमित्राणि

4. सत्यमभिहितं भवता ममापि अभीष्टमेतत् –

प्रत्युत्पन्नमतिः अनागतविधातारम्

i¥pe% ikB%

vgk! jktr% dh–'kh;% fgekuh

O;kdj.kka'k%

1- lekukFkZdkfu inkfu

प्रयाताः	=	गताः
उपत्यका	=	पर्वतस्य अधस्तात् विद्यमाना भूमिः
आस्तृतः	=	विस्तृतः
बालुकाः	=	सिकताः
रात्रौ	=	निशि
आलोकम्	=	प्रकाशम्
आख्यः	=	नाम
प्रसभम्	=	अधिकम्
इन्दोः	=	चन्द्रस्य
किरणेषु	=	मयूखेषु
अङ्कः	=	चिह्नानि
भूयिष्ठम्	=	विपुलम्, अत्यधिकम्

2, सन्धिपदानि

कीदृशीयम्	=	कीदृशी + इयम्	सवर्णदीर्घः
सङ्कल्पवताम्	=	सं + कल्पवताम्	परसवर्णः
कश्चित्	=	कः + चित्	विसर्गः
विशिष्टोऽर्थः	=	विशिष्टः + अर्थः	विसर्गः
प्रदेशीया गिरयः	=	प्रदेशीयाः + गिरयः	विसर्गलोपः
मार्गेणैव	=	मार्गेण + एव	वृद्धिः
चित्रेऽस्मिन्	=	चित्रे + अस्मिन्	पूर्वरूपम्
महोदये	=	महा + उदये	गुणः
इत्यभिदानेन	=	इति + अभिदानेन	यण्
पर्यटनस्थलम्	=	परि + अटनस्थलम्	यण्
इत्याख्यः	=	इति + आख्यः	यण्
प्रासादोऽपि	=	प्रासादः + अपि	विसर्गः
तेऽपि	=	ते + अपि	पूर्वरूपम्
वार्षिकोत्सवः	=	वार्षिक + उत्सवः	गुणः
निमज्जतीन्दोः	=	निमज्जति + इन्दोः	सवर्णदीर्घः
किरणेष्विव	=	किरणेषु + इव	यण्

3- lekl inkfu

दृढ़सङ्कल्पाः	=	दृढः सङ्कल्पः येषां ते,	बहुव्रीहिः
यात्रावृत्तम्	=	यात्रायाः वृत्तम्	षष्ठीतत्पुरुषः
यथास्थानम्	=	स्थानम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभावः
विपुलहिमराशिना	=	विपुलेन हिमराशिना	कर्मधारयः
उपत्यकाभूमिम्	=	उपत्यकायाः भूमिम्	षष्ठीतत्पुरुषः
नीलाकाशः	=	नीलः च असौ आकाशः	कर्मधारयः
सिंधुनदी	=	सिन्धुः इति नदी	कर्मधारयः
नीलवर्णा	=	नीलः वर्णः यस्याः सा	बहुव्रीहिः
बौद्धधर्मस्य	=	बौद्धानां धर्मस्य	षष्ठीतत्पुरुषः
उत्सवप्रियाः	=	उत्सवः प्रियः येषां ते	बहुव्रीहिः
वार्षिकोत्सवः	=	वार्षिकः उत्सवः	कर्मधारयः
हिमराशिः	=	हिमानां राशिः	षष्ठीतत्पुरुषः
भूमिसेचने	=	भूम्याः सेचने	षष्ठीतत्पुरुषः
गिरिराजस्य	=	गिरेः राज्ञः	षष्ठीतत्पुरुष।
महाकवेः	=	महान् च असौ कविः च तस्य, कर्मधारयः	
अनन्तरत्नप्रभवस्य	=	अनन्तरत्नानां प्रभवः तस्य	षष्ठीतत्पुरुषः।
गुणसन्निपाते	=	गुणानां सन्निपाते	षष्ठीतत्पुरुष।

4, प्रकृतिः प्रत्ययः च

शब्दाः		प्रकृतिः	प्रत्ययः
कीदृशी	=	कीदृश + ङीप्	
कुर्वताम्	=	कृ + शतृ	
शिक्षिका	=	शिक्षक + टाप्	
मत्वा	=	मन् + क्त्वा	
प्रयाताः	=	प्र + या + क्त	
साहसिकम्	=	साहस + ठक्	
द्रष्टुम्	=	दृश् + तुमुन्	
आस्तृतः	=	आस्तृ + क्त	
विभजन्ती	=	विभज् + शतृ	
सिन्धुनदी	=	सिन्धुनद + ङीप्	
प्रसिद्धम्	=	प्र + सिध् + क्त	
प्रख्याताः	=	प्रख्या + क्त	
अवलोकितम्	=	अव़लोक + क्त	
उत्कीर्णाः	=	उत् + किर् + क्त	
प्रदर्शितम्	=	प्रदृश् + णिच् + क्त	

5- fo'k"k.k fo'k";k p fy[kr &

- विशेषणम् — विशेष्यम्
- रोचकं, साहसिकं — अभियानम्
- धवलाः, लद्दाखप्रदेशीयाः — गिरयः
- आस्तृतः — नीलाकाशः
- नीलवर्णाः — नदी
- सर्वां — भूमिं
- दृश्यमानानि — स्थलानि
- प्रसिद्धं — पर्यटनस्थलम्
- प्रसिद्धः/प्राचीनः — श्वेतस्तूपः
- प्रज्वलितेषु — दीपेषु
- भव्यम् — आलोकम्
- प्रख्याताः — बौद्धमठाः
- विशालकाया — मूर्तिः
- पुरातत्त्वसम्बन्धीनि — चित्राणि
- उत्सवप्रियाः — मानवाः
- भगवन्तं — बुद्धम्
- उत्कीर्णाः — लेखाः
- भारतीयैः — वीरैः
- शीते — ऋतौ
- महान् — हिमराशिः
- ग्रीष्मे — ऋतौ
- घनीभूतम् — हिमम्
- सौभाग्यविलोपि — हिमम्

6- çl³xkuqlkja lkFkZdku~ vFkkZu~ fpuqr &

mÙkj³x — पर्वतानाम्

- शिखराणि — mUurkuke~ — अतिभङ्गानि

आकाशः *आस्तृतः* विद्यते

- परिस्तरणम् — प्रसृतः — foLr`r%

ckyd% उड्डीय

- बालकाः — fldrk% — व्याकुलाः

भव्यम् vkykd% वितरति।

- çdk'ke~ — Loykide~ — अलीकम्

प्रेक्षकान् çlHke आकर्षतः

- fujUrje~ कदाचित् प्रतिभासम्

भूमि सेचने Hkf;"Be~ उपकरोति।

- प्रतिष्ठितम् vR;f/kde~ कनिष्ठम्

निमज्जतीन्दोः किरणेषु इव v³d%

- fpàe~ 'k³[k% शङ्का

7- mfprfØ;kinkfu fpRok okD;kfu iwj;r&

1. उपविशत, अहं प्रक्षेपक – यन्त्रेण .... (दर्शयति / दर्शयन्ति / दर्शयामि)
2. पर्वतप्रदेशीयाः गिरयः अतीव .... (शोभते / शोभन्ते / शोभामहे,
3. दीर्घाणि एतानि स्थानानि ....(स्थ / सन्ति / अस्मि)
4. शीतेऋतौ महान् हिमराशिः .... (पतन्ति, पततः, पतति)
5. घनीभूतं हिमंगिरिराजस्य शोभां सततं .... (वर्धयति / वर्धयन्ति / वर्धयतः)
6. इन्दोः किरणेषु दोषः .... (निमज्जति / निमज्जन्ति / नैमज्जामः)

उत्तराणि (1. दर्शयामि 2. शोभन्ते 3. सन्ति 4. पतति 5. वर्धयति 6. निमज्जति।

8- laoknka'ka ifBRok ç'ukuke~ mÙkjkf.k fy[kr & mnkgj.kkFk± ,d% ,o laokn% çnh;rs A

शिक्षिका – नास्ति सन्देहः ....

.... बौद्धधर्मस्यप्रवेशः अभवदिति।

1. एकपदेन उत्तरं लिखत –

क.	किं संचलति?	प्रक्षेपकम्
ख.	उत्तुङ्गपर्वतानां उपत्यका भूमिं किमिति वदन्ति?	लद्दाख इति
ग.	के सर्वंद्रष्टुम् उत्सुकाः?	छात्राः
घ.	बौद्धधर्मस्य प्रवेशः कथमभवत्?	लद्दाखमार्गेण
ङ.	केन धवलाः ते गिरयः?	विपुलहिमराशिना
च.	तिब्बत क्षेत्रे कस्य प्रवेशः अभवत्?	बौद्धधर्मस्य
छ.	केषाम् उपत्यका भूमिं लद्दाख इति वदन्ति?	उत्तुङ्गपर्वतानाम्

2- funsZ'kkuqlkje~ mÙkjr fy[kr &

छ. उत्साह युक्ताः इत्यर्थे संवादे किं पदमस्ति?

ज. गिरयः इति पदस्य किं विशेषणम्?

झ. अस्माकं कक्षायाः अत्र अस्माकम् इति पदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

ञ. वाञ्छथ इति क्रियायाः कः कर्ता?

ट. 'कृष्णः' अस्य विलोमपदं संवादे किं प्रयुक्तम्?

AA l|/kkepkokp%AA

ikB"k lekxrkuk 'ykdkuk lnHkkxUFkk & do;% p

वदनं प्रसाद सदनम्	=	सुभाषितरत्नभाण्डागारसंग्रहः	
शिक्षाक्षयं गच्छति	=	कर्णभारम्	भासः
यथाचतुर्भिःकनकम्	=	चाणक्यनीतिः	चाणक्यः
व्रजन्ति ते मूढधियः	=	किरातार्जुनीयम्	भारविः
स किंसखा साधु	=	किरातार्जुनीयम्	भारविः
लोभश्चेदगुणेन	=	नीतिशतकम्	भर्तृहरिः

1- onu çlknlnu -- u r oU|k%AA

1- lekukFkd%

वदनम्	=	मुखम्
प्रसादसदनम्	=	अनुग्रहस्यगृहम्
सदयम्	=	सकरुणम्
हृदयम्	=	मनः, चित्तम्
सुधामुचः	=	अमृतंमुञ्चन्त्यः
वाचः	=	गिरः, वाण्यः,
करणम्	=	कार्यम्
परोपकरणम्	=	परानुग्रहः / अन्येषां साहाय्यम्
वन्द्याः	=	स्तुत्याः

2- foykeinkfu

सदयम्	•	निर्दयम्
सुधा	•	विषम्
परोपकरणम्	•	अपकरणम्
वन्द्याः	•	निन्द्याः

3- lfU/kinkfu

वदनंप्रसादसदनम्	=	वदनम् + प्रसादसदनम् (अनुस्वार)
सदयं हृदयम्	=	सदयम् + हृदयम् (अनुस्वार)
सुधामुचोवाचः	=	सुधामुचः + वाचः (विसर्ग)
परोपकरणम्	=	पर + उपकरणम् (गुण)

4- leklinkfu

प्रसाद सदनम्	=	प्रसादस्य सदनम्
सदयम्	=	दयया सहितम्
सुधामुचः	=	सुधां मुञ्चन्ति इति
परोपकरणम्	=	परेषाम् उपकरणम्

5- fo'k"k.ke~ — fo'k";e~

प्रसादसदनम्	वदनम्
सदयम्	हृदयम्
सुधामुचः	वाचः
परोपकरणम्	करणम्
वन्द्याः	ते (नराः)

6- loZukeinkfu

येषाम्	केषाम्

7- vO;;ine~

न

2. शिक्षाक्षयं .... तिष्ठति।।2।।

1- lekukFkZdkfu

शिक्षा	=	ज्ञानम्
क्षयम्	=	नाशम्
गच्छति	=	याति
कालपर्ययात्	=	समयपरिवर्तनेन
सुबद्धमूलाः	=	सुदृढ़मूलाः
पादपाः	=	वृक्षाः
निपतन्ति	=	पतिताःभवन्ति
जलम्	=	वारि
जलस्थान गतम्	=	सरोवर गतम्
हुतम्	=	अग्नौ दत्तं
दत्तं	=	दानरुपेणार्पितम्
तथैव	=	यथा अस्ति तथा
तिष्ठति	=	भवति

2- foykseinkfu

क्षयम्	•	उद्भवम्
गच्छति	•	आगच्छति
निपतन्ति	•	उत्तिष्ठन्ति
जलम्	•	अग्निः
दत्तम्	•	आदत्तम्
तिष्ठति	•	नश्यति

3- lfU/kinkfu

क्षयं गच्छति	=	क्षयम् + गच्छति (अनुस्वार)
सुबद्धमूला निपतन्ति	=	सुबद्धमूलाः + निपतन्ति (विसर्गलोप)
तथैव	=	तथा + एव (वृद्धि)
सदैव	=	सदा + एव (वृद्धि)

4- lekl inkfu &

कालपर्ययात्	=	कालस्य पर्ययात् (षष्ठीतत्पुरुष)
सुबद्धमूलाः	=	सुबद्धानि मूलानि येषां ते (बहुव्रीहि)
जलस्थानगतम्	=	जलस्थानं गतम् (द्वितीयातत्पुरुष)

5-

'kCnk%	ç—fr%	çR;;%
शिक्षा	शिक्ष +	टाप्
गतम्	गम् +	क्त
हुतम्	ह्व +	क्त
दत्तम्	दा +	क्त

6-

fo'ks"k.k	fo'ks";e
सुबद्धमूलाः	पादपाः
जलस्थानगतम्	जलम्

7- v0;;kfu

च तथा एव

8.

कर्ता	क्रिया	कर्मपदम्
शिक्षा	गच्छति	क्षयम्
पादपाः	निपतन्ति	
जलम्	शुष्यति	
हुतं दत्तम् (वस्तु)	तिष्ठति	

9- v- ,dinu mÙkj; fy[kr &

1, कुत्रस्थं जलं शुष्यति?

2. कीदृशाः पादपाः निपतन्ति?

3, का क्षयं गच्छति?

4. किं तथैव तिष्ठति?

5. जलस्थानगतं किं शुष्यति?

6. के निपतन्ति?

mÙkjkf.k &

1, जलस्थानगतम्, 2. सुबद्धमूलाः 3. शिक्षा 4. हुतंदत्तम् 5. जलम् 6. पादपाः

vk- ;Fkkfun'keUkj fy[kr &

1. xPNfr इति क्रियायाः कः कर्ता?

2. æ|ek इत्यर्थे श्लोके किं पदमस्ति?

3. iknik% इति पदस्य किं विशेषणम् अस्ति?

4. Loh—re~ अस्य किं विलोमपदम् अस्ति?

5. lc)ey% अस्य किं विशेष्यम् अस्ति?

mÙkjkf.k

1. शिक्षा 2. पादपाः 3. सुबद्धमूलाः 4. दत्तम् 5. पादपाः

3- ;Fkk prfHk% ---------------------------------- x.kudeZ.kkA

1- lekukFkZd%

कनकम्	=	सुवर्णम्, हेम
पुरुषः	=	नरः, मानवः
त्यागेन	=	उदारतया
शीलेन	=	चरित्रेण
कर्मणा	=	कार्येण, कर्तव्येन
परीक्ष्यते	=	समीक्ष्यते

2- foykseinkfu

कनकम्	•	रजतम्
त्यागेन	•	स्वार्थेन / भोगेन
शीलेन	•	दुःशीलेन
गुणेन	•	दुर्गुणेन / अगुणेन
कर्मणा	•	कुकर्मणा

3- lekline~

निघर्षणच्छेदनतापताडनैः = निघर्षणं च छेदं च तापं च ताडनं च तैः (द्वन्द्व)

4. अव्ययपदम्

यथा तथा

4- oztfUr --------------------------------- bo"ko%A

1- lekukFkZd%

व्रजन्ति	=	यान्ति / गच्छन्ति
मूढधियः	=	मन्दबुद्धयः
पराभवम्	=	पराजयम्
मायाविषु	=	कपटिषु
मायिनः	=	कपटिनः

भवन्ति	=	सन्ति
प्रविश्य	=	प्रवेशं कृत्वा
घ्नन्ति	=	नाशयन्ति/मारयन्ति
शठाः	=	धूर्ताः
तथाविधान्	=	तादृशान्
असंवृताङ्गान्	=	अनावृताङ्गान्
निशिताः	=	तीक्ष्णाः
इषवः	=	बाणाः

2- foykeinkfu

मूढ़धियः	•	पण्डिताः
पराभवम्	•	जयम्
मायाविषु	•	निष्कपटिषु
मायिनः	•	अकपटिनः
प्रविश्य	•	निर्गत्य
घ्नन्ति	•	रक्षन्ति
शठाः	•	विनीताः
असंवृताङ्गान्	•	संवृताङ्गान्

3- lfU/kinkfu

शठास्तथाविधान्	=	शठाः + तथाविधान् (विसर्ग)
इवेषवः	=	इव + इषवः (गुण)

4- leLrinkfu

मूढधियः	=	मूढा धीः येषां ते	बहुव्रीहिः
असंवृताङ्गान्	=	न संवृताङ्गान्	नञ् तत्पुरुष

5- 'kCnk%   ç—fr% çR;;%

मायिनः	=	माया + इन्
प्रविश्य	=	प्र + विश्+ ल्यप्

6- fo'k"k.ke~   fo'ks";e~

तथाविधान्	शठान्
असंवृताङ्गान्	तथा विधान् (नरान्)
निशिताः	इषवः

7- drk   fØ;kp

मूढधियः	व्रजन्ति
(ये) मायिनः	भवन्ति
शठाः (इषवः)	घ्नन्ति

8- v0;;inkfu

न प्रविश्य इव

9- lo±ukeinkfu

ते ये

10- ,dinu mÙkje~

1. के पराभवं व्रजन्ति?
2. इषवः प्रविश्य किं कुर्वन्ति?
3. के प्रविश्य घ्नन्ति?
4. इषवः कान् प्रविश्य घ्नन्ति?
5. मूढधियः केषु मायिनः न भवन्ति?
6. कीदृशाः इषवः शरीरं प्रविशन्ति?

mÙkjkf.k & मूढधियः, घ्नन्ति, इषवः, असंवृताङ्गान्, मायाविषु, निशिताः।

11- ;Fkk funsZ'kaeqÙkjr fy[kr &

oztfUr इति क्रियायाः कः कर्ता?

t;e~ अस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तमस्ति?

vlaor`k³xku~ अस्य किं विशेष्यम्?

çfo'; कृत्वा इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

fuf'krk% अस्य किं विशेष्यं श्लोके अस्ति?

dq'ky% अस्य किं विलोमपदमत्र दत्तम्?

oztfUr ते अत्र ते इति पदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

mÙkjkf.k & मूढधियः, पराभवम्, नरान्, प्रविश्य इषवः, मूढधियः, मूढधीभ्यः।

5- lfd lq[kk -- lo±lEin%A

1- lekukFkZdk%&

किं सखा	=	कुत्सितमित्रम् / कुमित्रम्
अधिपम्	=	राजानम्
हितान्	=	उपयुक्तान्, लाभाकारिणः
शृणुते	=	अवधारयति
किंप्रभुः	=	कुत्सितनृपतिः / कुराजा
अनुकूलेषु	=	सहकारिषु
कुर्वते	=	कुर्वन्ति / आचरन्ति
रतिम्	=	प्रेम / संयोगम्
नृपेषु	=	राजसु
अमात्येषु	=	मन्त्रिषु / सचिवेषु
सकलसम्पदः	=	सर्वैश्वर्याणि / सर्वविभूतयः
साधु	=	सम्यक्

2- foykseinkfu&

किंसखा	•	सन्मित्रम्/सुमित्रम्
हितान्	•	अहितान्
किंप्रभुः	•	सुराजा
अनुकूलेषु	•	प्रतिकूलेषु
रतिम्	•	विरतिम्
सम्पदः	•	विपदः

3- lfU/k 'kCnk%

योऽधिपम्	=	यः + अधिपम्	=	विसर्गः
सदानुकूलेषु	=	सदा + अनुकूलेषु	=	सवर्णदीर्घः
नृपेष्वमात्येषु	=	नृपेषु + अमात्येषु	=	यण्

4- lekl% &

किं सखा	=	कुत्सितः सखा	कर्मधारयः
किं प्रभुः	=	कुत्सितः प्रभुः	कर्मधारयः
सर्वसम्पदः	=	सर्वाः सम्पदः	कर्मधारयः

5- drkZ ¾ fØ;k p

किं सखा	=	शास्ति
किंप्रभुः	=	शृणुते
सर्वसम्पदः	=	कुर्वते

6- loZukeinkfu

सः यः

7- vO;;kfu

न च

8- ,d inu mÙkj fy[kr &

1. कः अधिपं साधु न शास्ति?
2. किं प्रभुः कान् न शृणुते?
3, सर्वसम्पदः कां कुरुते?
4. केषु सम्पदःरतिं कुर्वते?
5. यः हितानि न शृणोति सः कः अस्ति?
6. कीदृशेषु सम्पदः रतिं कुर्वते?
7. नृपेषु काः रतिं कुर्वते?

mÙkjkf.k & किंसखा, हितान्, रतिं, नृपेषु/अमात्येषु, किंप्रभुः, अनुकूलेषु, सर्वसम्पदः,

9- ;Fkkfuni'keÙkj fy[kr &

- सम्यक् इत्यर्थे श्लोके किं पदमस्ति?
- शृणुते इति क्रियायाः कः कर्ता?
- प्रतिकूलेषु अस्य किं विलोमपदमत्रास्ति?
- सर्वसम्पदः अस्य का क्रिया श्लोके अस्ति?
- सः किं प्रभुः अत्र सः इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
- श्लोके स्थितमेकं सर्वनामपदंचित्वा लिखत।

mÙkjkf.k & साधु, किंसखा, अनुकूलेषु + कुर्वते, किं सखा इति पदस्य कृते, सः यः

6- ykHk'pnx.ku -- fd eR;ukA

1- lekukFkZdk

लोभः	=	अत्याशा
चेत्	=	यदि
अगुणेन	=	दुर्गुणेन
पिशुनता	=	दुर्जनता / दुर्जनत्वम्
पातकैः	=	पापैः
सत्यम्	=	ऋतम्
तपसा	=	तपस्यया
शुचिमनः	=	शुद्धंमानसम्
तीर्थेन	=	पुण्यक्षेत्रेण
सौजन्यम्	=	सुजनता / सद्गुणत्वम्
सुमहिमा	=	सुयशः
मण्डनैः	=	अलङ्कारैः
अपयशः	=	अपकीर्तिः
मृत्युना	=	मरणेन

2- foykeinkfu

लोभः	•	उदारता
अगुणेन	•	गुणेन
पिशुनता	•	सज्जनता
पातकैः	•	पुण्यैः
शुचिमनः	•	कलुषितचित्तम्
सौजन्यम्	•	दौर्जन्यम्
गुणैः	•	दुर्गुणैः
सद्विद्या	•	दुर्विद्या

अपयशः	•	सुयशः	
मृत्युना	•	जन्मना	

3- lfU/kinkfu

लोभश्चेदगुणेन	=	लोभः + चेदगुणेन	(विसर्ग)
यद्यस्ति	=	यदि + अस्ति	(यण)
शुचिमनो यदि	=	शुचिमनः + यदि	(विसर्ग)
सौजन्यं यदि	=	सौजन्यम् + यदि	(अनुस्वार)
सद्विद्या	=	सत् + विद्या	(जश्त्व)
धनैरपयशः	=	धनैः + अपयशः	(विसर्ग)

4- lekl%

अगुणेन	=	न गुणेन	नञ् तत्पुरुषः
शुचिमनः	=	शुचिमनः यस्य सः	बहुव्रीहिः
सुमहिमा	=	सुष्ठु महिमा यस्य सः	बहुव्रीहिः
सद्विद्या	=	शोभना विद्या	कर्मधारयः

5- ç—fr% çR;;%

पिशुनता	=	पिशुन + तल्
सद्विद्या	=	सद्विद्य + टाप्

AA lIre% ikB%AA

AA nkfjæ;a nqyZHk lÙoe~AA

dfodk0;ifjp;%

कविः – भासः

कालः – प्रायः इ.पूर्व चतुर्थशताब्दी

देशः – निश्चितः नास्ति। प्रायः औत्तरेयः इति ज्ञायते

कृतयः – चतुर्दश नाटकानि। उदाहरणार्थं
चारुदत्तः, दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, प्रतिमानाटकम्, बालचरितम् इत्यादि।

प्रशस्तिः – भासोहासः

0;kdj.kk'kk%

1- lekukFkZdk%

- सत्त्वम् = मनः
- प्रत्यूषे = प्रभाते
- कमलम् = अम्बुजम्
- अक्षिणी = नयने
- गेहं = गृहम्
- संविधा = भोजनव्यवस्था
- विहिता = कृता
- शब्दापयामि = आह्वयामि
- दात्री = दायिका
- सज्जम् = सिद्धम्
- विलोक्य = दृष्ट्वा
- वयस्यः = मित्रम्
- नेपथ्ये = यवनिकायाःपृष्ठतः
- भणामि = वदामि
- अशनम् = भोजनम्
- पारावतैः = कपोतैः
- समम् = सदृशम्
- सुमनसः = विप्रस्य
- मनस्विनः = उदारचेतसः
- विपन्नविभवस्य = नष्टसम्पदः
- ज्योत्स्ना = चन्द्रिका
- श्रेयस्करम् = मङ्गलकरम्
- प्रत्ययात् = अवगमात्/विश्वासात्

- सुहृदः = मित्राणि
- स्फीताः = नष्टाः
- आपदः = विपत्तयः
- निःसरन्ति = निर्गच्छन्ति
- भार्या = जाया / पत्नी
- तण्डुलाः = अक्षताः

2- foijhrkFkZdk%

- दुर्लभम् = सुलभम्
- प्रविश्य = निर्गत्य
- चिरम् = अचिरम्
- सरोषम् = सानन्दम्
- आरोप्य = पातयित्वा
- दरिद्रम् = अर्थवन्तम्
- अन्धकारः = प्रकाशः

3- lfU/kinkfu

- मेऽक्षिणी = मे + अक्षिणी (पूर्वरूपं)
- इतस्तावत् = इतः + तावत् (विसर्ग)
- आगतोऽस्मि = आगतः + अस्मि (विसर्ग)
- कोऽपि = कः + अपि (विसर्ग)
- तण्डुलाश्च = तण्डुलाः + च (विसर्ग)
- ममोपवासः = मम + उपवासः (गुण)
- एवागच्छति = एव + आगच्छति (दीर्घ)
- भविष्यतीति = भविष्यति + इति (दीर्घ)
- गेहेऽहोरात्रम् = गेहे + अहोरात्रम् (पूर्वरूपं)
- पुनरपि = पुनः + अपि (विसर्ग)
- तदैव = तदा + एव (वृद्धि)
- सोच्छ्वासम् = स + उच्छ्वासम् (गुण)
- परिक्षयइव = परिक्षयः + इव (विसर्गलोपः)
- रमणियोऽयम् = रमणियः + अहम् (विसर्ग)
- खल्वहम् = खलु + अयम् (यण)
- दुःखान्यनुभूय = दुःखानि + अनुभूय (यण)
- अन्धकारादिव = अन्धकारात् + इव (जश्त्व)
- श्रेयस्करम् = श्रेयः + करम् (विसर्ग)
- भवन्त्यापदः = भवन्ति + आपदः (यण)

- परैरपि = परैः + अपि (विसर्ग)
- प्रादुर्भवन्ति = प्रादुः + भवन्ति (विसर्ग)

4- lekl inkfu

सूत्रधारः	=	सूत्रं धारयति इति	उपपदतत्पुरुषः
सरोषम्	=	रोषेण सहितम्	अव्ययीभावः
अहोरात्रम्	=	अहः च रात्रिः च एतयोः समाहारः समाहार द्वन्द्वः	
यथाविभवम्	=	विभवम् अनतिक्रम्य –	अव्ययीभावः
चङ्गेरिकाहस्ता	=	चङ्गेरिका हस्ते यस्याः सा–	बहुव्रीहिः
सोच्छ्वासम्	=	उच्छ्वासेन सहितम्	अव्ययीभावः
विपन्नविभवस्य	=	विपन्नाः विभवाः यस्य सः	बहिव्रीहिः
ज्योत्स्नापरिक्षयः	=	ज्योत्स्नायाः परिक्षयः	षष्ठीतत्पुरुषः
गुणरसज्ञस्य	=	गुणरसान् जानाति इति तस्य उपपद तत्पुरुषः	
दीपदर्शनम्	=	दीपस्य दर्शनम्	षष्ठीतत्पुरुषः
अर्थविभवम्	=	अर्थस्य विभवम्	षष्ठीतत्पुरुषः
श्रेयस्करम्	=	श्रेयःकरोति इति	उपपदतत्पुरुषः
नष्टधनश्रियः	=	नष्टा धनश्रीः यस्य एवं भूतः	बहुव्रीहिः
निर्वैरा	=	निर्गतं वैरं यस्मात् सा	बहुव्रीहिः
चिन्ताङ्कुराः	=	चिन्तायाः अङ्कुराः	षष्ठीतत्पुरुषः
विभवानुवशा	=	विभववशात् अनुवशा	पञ्चमीतत्पुरुषः

5- ç—fr% çR;;% p

शब्दाः	प्रकृतिः	प्रत्ययः च
गता	=	गम् + क्त
गत्वा	=	गम् + क्त्वा
परिक्रम्य	=	परिक्रम् + ल्यप्
दात्री	=	दातृ + ङीप्
आरोप्य	=	आरोप् + ल्यप्
पातितः	=	पत् + णिच् + क्त
निमन्त्रयितुम्	=	निमन्त्र + णिच् + तुमुन्
निमन्त्रितः	=	निमन्त्र + क्त
निष्क्रान्तः	=	निस् + क्रम् + क्त
अशितव्यम्	=	अश् + तव्यत्
अशित्वा	=	अश् + क्त्वा
दरिद्रतया	=	दरिद्र + तल्
भुक्त्वा	=	भुज् + क्त्वा

- अर्चयन् = अर्च + शतृ
- सन्तप्तुम् = सम् + तप् + तुमुन्
- रमणीयः = रम् अनीयर्
- दरिद्रताम् = दरिद्र + तल्
- स्थितः = स्था + क्त
- मृतः = मृ + क्त
- क्षीणाः = क्षी + क्त
- जाताः = जन् + क्त
- भार्या = भार्य + टाप्
- सत्त्वम् = सत् + त्व
- परिभ्रष्टम् = परिभ्रज् + क्त

6- fo'k"k.ke fo'k";e

- विहिता संविधा
- शोभनानां भोजनानाम्
- दरिद्रं जनम्
- योग्यम् जनम्
- सम्पन्नम् अशनम्
- मनस्विनः पुरुषस्य
- दारुणतरं व्यसनम्
- दरिद्रतां दशाम्
- क्षीणाः अर्थाः
- स्फीताः आपदः
- पापं कर्म
- विभवानुवशा भार्या

7] lokn ifBRok ç'ukuke mÙkjkf.k fy[kr &

सूत्रधारः – किन्नु खलु .... नहि नहि अन्तरापणे।

1- ,dinu mÙkj fy[kr &

क. केषां दात्री भव इति सूत्रधारः वदति?

ख. सूत्रधारः प्रातः कस्मात् निर्गच्छति?

ग. कौ इव अक्षिणी चञ्चलायेते?

घ. सूत्रधारः कां शब्दापयति?

ङ. गृहे किम् किम् अस्ति इति नटी वदति?

च. कदा सूत्रधारः गृहात् निर्गच्छति?

mÙkjkf.k&

1. भोजनानाम् 2. गेहात्, 3. पुष्करपतितजलबिन्दू, 4. आर्याम्, 5. घृत–गुड–दधि इत्यादि, 6. प्रत्यूषे

2- ;Fkkfun'ks'kaUkj fy[kr&

1. क्षुधया इत्यर्थे अनुच्छेदे किं पदमस्ति?
2. संविधा अस्य अर्थः .... (बहिविधा / भोजनव्यवस्था)
3. सायम् अस्य विलोमपदं किम्?
4. अनुच्छेदे जानामि इति क्रियायाः कः कर्ता?
5. चञ्चला ये ते मे अक्षीणि अत्र मे इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
6. निर्गम्य अस्य किं विलोम पदमत्र प्रयुक्तम्?

mÙkjkf.k&

1. बुभुक्षया, 2.भोजन व्यवस्था, 3. प्रात्यूषः, 4. अहम् (सूत्रधारः), 5. सूत्रधाराय, 6. प्रविश्य

8- fon"kd% & uu Hk.kkfe -------------------------------- ;koÙke~ i l ikfeA

d- ,dinu mÙkj fy[kr &

1. कीदृशम् अन्नम् अशितव्यम्?
2. परस्य कानि अभिलषणीयानि?
3. कस्य गेहे विदूषकः आकण्ठमात्रम् अश्नाति?
4. कस्य दरिद्रतया विदूषकः अन्यत्र भुनक्ति?
5. चारुदत्तेन कस्य अन्तरीयवासः गृहीतः?
6. चारुदत्तः कानि अर्चयन् इतः आगच्छति?

उत्तराणिः– सम्पन्नम्, आमन्त्रणकानि, चारुदत्तस्य, चारुदत्तस्य, सुमनसः, गृहदैवतानि

[k- ;Fkkfun'ks'kaUkj fy[kr &

- कथयामि इत्यर्थे संवादे किं पदमस्ति?
- तदानीम् अस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
- उपसर्पामि इति क्रियायाः कः कर्ता?
- निमन्त्रयतु भवान् अत्र भवान् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
- अशनम् अस्य किं विशेषणम्?
- गृहे अस्य पदस्य अर्थः?
- भुक्त्वा इत्यर्थे किं पदमस्ति?

mÙkjkf.k%& (भणामि, इदानीम्, सूत्रधारः, चारुदत्ताय, सम्पन्नम्, गेहे, अशित्वा)

9- r`rh;% laokn%

चारुदत्तः– (दीर्घं निश्वस्य, ... शरीरेणमृतः सजीवति।

1- ,dinu mÙkj fy[kr &

- दारिद्र्यं कस्य सोच्छ्वासस्मरणम्?
- दुःखान्यनुभूय किं शोभते?
- चारुदत्तः केन विपन्नविभवः आसीत्?
- कः नष्टां श्रियं न अनुशोचति?

- कीदृशस्य पुरुषस्य व्यसनं दारुणतरं भवति?
- कानि अनुभूय सुखं शोभते?
- दारिद्र्यं कीदृशस्य पुरुषस्य सोच्छ्वासस्मरणम्?

2- mÙkjkf.k

पुरुषस्य, सुखम्, दानेन, चारुदत्तः, गुणरसज्ञस्य, दुःखानि, मनस्विनः

3- ;FkkfunsZ'keqÙkjr &

- पुरुषस्य अस्य पदस्य किं विशेषणम्?
- चन्द्रिका इत्यर्थे संवादे किं पदं प्रयुक्तम्?
- न खल्वहंनष्टाम् अत्रअहम् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
- सम्पन्नताम् अस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?
- शोभते इति क्रियायाः कः कर्ता?

mÙkjkf.k %& 1. मनस्विनः, 2. ज्योत्स्ना, 3. चारुदत्तस्य, 4. दरिद्रताम्, 5. सुखम्

10- v= çnÙkkuka i³ähuka funsZ'kkuqlkjs mÙkjkf.k fy[kr &

1. अहं पर्वतात् दूरमारोप्य पातितोऽस्मि।

   इदं वाक्यं कस्मात् पाठात् स्वीकृतम्?

   कः इदं वाक्यं वदति?

   mÙkjs %& दारिद्र्ये दुर्लभं सत्त्वम् – सूत्रधारः नटीं प्रतिवदति

2. चारु दत्तस्य दरिद्रतया पारावतैःसमम् अन्यत्र भुक्त्वातस्य आवासं गच्छामि।

   अस्य वाक्यस्य मूलग्रन्थः कः?

   कः तं ग्रन्थं लिखितवान्?

   mÙkjs & चारुदत्तम् तत्र चत्वारः अङ्काः सन्ति। भासकविः लिखितवान्

3. दरिद्रतानाम् मनस्विनः पुरुषस्य सोच्छ्वासंमरणम् –

   कः इदं वाक्यं वदति?

   कस्मात्पाठात् इदं वाक्यं स्वीकृतम्?

   mÙkjs %& चारुदत्तः इदं वाक्यं वदति। दारिद्र्ये दुर्लभं सत्त्वम् इति पाठात्

4. गुणरसज्ञस्य पुरुषस्य व्यसनं दारुणतरं प्रतिभाति।

   कः कं प्रति इदं वाक्यं वदति? ग्रन्थः कः?

   mÙkjs & चारुदत्तः विदूषकं प्रतिवदति। ग्रन्थस्यनाम – चारुदत्तम् नामनाटकम्।

5. बहुलपक्ष चन्द्रस्य ज्योत्स्ना परिक्षय इव रमणीयः अयं दरिद्रभावः।

   इदं वाक्यं कस्मात् पाठात्स्वीकृतम् अस्ति? कः कंप्रतिवदति।

   उत्तरम् – दारिद्र्ये दुर्लभं सत्त्वम् इति नाटकम् – विदूषकः चारुदत्तम् प्रतिवदति।

AA vk'p;le;h foKkutxrAA

0;kdj.kk'kk%A

1- lekukFkdk% &

- अभिनन्दनम् = स्वागतम्
- यथाक्रमम् = क्रमानुसारम्
- पृथिव्याः = भूम्याः
- समतलभूमौ = उपरि
- प्रत्यारोपकः = पुनः स्थापकः
- प्रशंसनीया = स्तुत्या
- सम्प्रति = इदानीम्
- वल्मीकः = कीटेन निर्मितं मृत्तिकागृहम्
- सलिलम् = जलम्
- स्वादु = मधुरम्,
- शोभनम् = उत्तमम्
- ज्योतिषम् = नक्षत्रविज्ञानम्
- संकलिता = एकत्रीकृतः
- प्रस्तुतिः = मण्डनम्
- उपलब्धिः = यशांसि
- आधृत्य = आश्रित्य

2- lfU/kinkfu

- सभापतिभ्यश्च = सभापतिभ्यः + च विसर्गसन्धिः
- सर्वोत्तमान् = सर्व + उत्तमान् गुणः
- भवेदस्य = भवेत्. अस्य जश्त्वम्
- जलस्यान्तर्बहिः = जलस्य + अन्तः + बहिः सवर्णदीर्घः, विसर्गः
- सञ्चारस्तु = सञ्चारः + तु विसर्गः
- प्राग्वल्मीकः = प्राक् + वल्मीकः जश्त्वम्
- वृक्षायुर्वेदः = वृक्ष + आयुः + वेदः सवर्णदीर्घः, विसर्गः
- इत्यादयः = इति + आदयः यण्
- वैज्ञानिकैरपि = वैज्ञानिकैः + अपि विसर्गः
- तथैव = तथा + एव वृद्धिः
- नक्षत्रादयः = नक्षत्र + आदयः सवर्णदीर्घः
- नागार्जुनः = नाग + अर्जुनः सवर्णदीर्घः
- चतुर्गुणेन = चतुः + गुणेन विसर्गः
- कोऽपि = कः + अपि विसर्गः

• प्रतिध्वन्यात्मकाः	=	प्रतिध्वनि + आत्मकाः	यण्
• दिग्दिगन्तेषु	=	दिक् + दिगन्तेषु	जश्त्वम्

3- lekl inkfu

• सभागारस्य	=	सभायै आगारः तस्य	चतुर्थीतत्पुरुषः
• सभापतिभ्यः	=	सभायाः पतिः तेभ्यः	षष्ठीतत्पुरुषः
• स्वाध्ययनस्य	=	स्वस्य अध्ययनस्य	षष्ठीतत्पुरुषः
• करतल ध्वनिना	=	करतलानां ध्वनिना	षष्ठीतत्पुरुषः
• त्रिपुर विमानस्य	=	त्रिपुरम् इति विमानस्य	कर्मधारयः
• यथाक्रमम्	=	क्रमम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभावः
• प्रथमभागस्य	=	प्रथमस्य भागस्य	कर्मधारयः
• पृथिवीतले	=	पृथिव्याः तले	षष्ठीतत्पुरुषः
• प्रमुख चिकित्सकस्य	=	प्रमुखस्य चिकित्सकस्य	कर्मधारयः
• प्रिय सहपाठिनः	=	प्रियाः च ते सहपाठिनः	कर्मधारयः
• सुश्रुतविरचिता	=	सुश्रुतेन विरचिता	तृतीयातत्पुरुषः
• समीपस्थः	=	समीपे तिष्ठति इति	उपपदतत्पुरुषः
• पशुविज्ञानम्	=	पशोः विज्ञानम्	षष्ठीतत्पुरुषः
• प्रियबान्धवाः	=	प्रियाः च ते बान्धवाः	कर्मधारयः
• दिल्लीस्थः	=	दिल्ल्यां तिष्ठति इति	उपपदतत्पुरुषः
• देवालये	=	देवानाम् आलये	षष्ठीतत्पुरुषः
• प्रार्थनासभायाम्	=	प्रार्थनायाः सभायाम्	षष्ठीतत्पुरुषः

4- ç—fr% çR;;k%

• शब्दाः	प्रकृतिः	प्रत्ययाः
• लब्धवन्तः	=	लभ् + क्तवतु
• प्रतिभाशालिनः	=	प्रतिभाशाल + इन्
• उपस्थिताः	=	उपस्था + क्त
• वर्णितः	=	वर्ण् + क्त
• अदृश्यताम्	=	अदृश्य + तल्
• सहपाठिनः	=	सहपाठ + इन्
• भवितुम्	=	भू + तुमुन्
• पठनीया	=	पठ् + अनीय
• छेद्यम्	=	छिद् + यत्
• लेख्यम्	=	लिख् + यत्
• प्रशंसनीया	=	प्रशंस + अनीयर्
• प्रस्तुतिः	=	प्रस्तुत् + क्तिन्

- सङ्कलिता = सङ्कल् + क्त
- भवती = भवत् + ङीप्
- पूर्वाभिमुखा = पूर्वाभिमुख + टाप्
- वैज्ञानिकैः = विज्ञान + ठक्
- गच्छतः = गम् + शतृ
- धावन्तः = धाव + शतृ
- सुषमा = सुषम + टाप्
- परिचिताः = परिचि + क्त
- अनुगृहीताः = अनुग्रह + क्त
- आधृत्य = आ + धृ + ल्यप्
- मिलित्वा = मिल् + क्त्वा
- प्रसिद्धा = प्र + सिध् + क्त टाप्,
- शुद्धम् = शुध् + क्त

5- fo'k"k.ke~ fo'k";e~

- लब्धवन्तः = छात्राः
- सर्वोत्तमान् = अङ्कान्
- प्रमुख चिकित्सकस्य = सुश्रुतस्य
- पठनीया = सुश्रुतसंहिता
- त्वक् प्रत्यारोपकः = सुश्रुतः
- बहुप्रसिद्धा = शल्यक्रिया
- प्रशंसनीया = प्रस्तुतिः
- स्वादु = सलिलम्
- सङ्कलिता = सामग्री
- पूर्वाभिमुखा = पृथिवी
- आधुनिकैः = वैज्ञानिकैः
- उपलब्धानां = शिल्पकला कृतीनाम्
- कम्पमानाः = स्तम्भाः
- सङ्गीतमयाः = स्तम्भाः
- ध्वनिवाहकाः = स्तम्भाः

6- v- lokn% ifBRok ç'ukuke~ mÙkjkf.k fy[kr &

सचिवः – विमानशास्त्रे .... सुश्रुतः प्रथमः त्वक् प्रत्यारोपकः अस्ति।

1- ,dinu mÙkje~

- कस्मिन् शास्त्रे लेपस्य विषये वर्णितः अस्ति?
- छात्राः करतलध्वनिना कस्य स्वागतं कुर्वन्ति?

- द्रवलेपनेन किम् अदृश्यतां याति?
- उत्तमशल्यचिकित्सकः भवितुं का पठनीया?
- सुश्रुतसंहिता केन रचिता?
- संहितायां कतिविधं शल्यकार्यं वर्णितम्?
- सुश्रुतसंहितायां कस्याः प्रत्यारोपणं विस्तारेण वर्णितमस्ति?
- कः प्रथमः प्रत्यारोपकः?
- केन सभागारः गुञ्जति?

mÙkjkf.k &

विमानशास्त्रे, अभिनवस्य, विमानम्, सुश्रुतसंहिता, सुश्रुतेन, अष्टविधम्, नासिकयाः, सुश्रुतः, करततलध्वनिना

2- ;Fkkfun'keÙkj fy[kr &

1, यस्य लेपनेन अत्र यस्य इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
2. अगोचरताम् इति अर्थे संवादे किं पदं प्रयुक्तम्?
3, इच्छामः इति क्रियायाः कः कर्ता?
4. त्वक्प्रत्यारोपकः अस्य किं विशेष्यं संवादे प्रयुक्तम्?
5. लघुरूपेण अस्य किं विलोम पदमत्रास्ति?

mÙkjkf.k

लेपाय, अदृश्यताम्, वयम्, सुश्रुतः, विस्तरशः

f}rh; ¼lokn½ & ¼vk½

fefgj% & ¼lLoje~ xk;fr½ -------------------------------------- of'k"Vî o.kZf;";frA

v- ,dinu mÙkj fy[kr &

1. कस्य वृक्षस्य पूर्वदिशि वल्मीकः स्यात्?
2. पुरुषद्वये किं भविष्यति?
3. केन विविधाः विषयाः वर्णिताः?
4. केन बहुमूल्या सामग्री सङ्कलिता?
5. वराहमिहिरेण कुत्र सर्वे विषयाः वर्णिताः?
6. वराहमिहिरेण कः ग्रन्थः लिखितः?
7. आर्यभटीयम् इति ग्रन्थस्य विषये का वर्णयति?
8. वृक्षायुर्वेदः वास्तुविज्ञानम् इत्यादयः विषयाः कुत्रलिखिताः?

mÙkjkf.k &

जम्बूवृक्षस्य, स्वादुसलिलम्, वराहमिहिरेण, मिहिरेण, बृहत्संहितायां, बृहत्संहिता, भारती, बृहत्संहितायाम्

2- ;Fkkfun'kseÙkj fy[kr &

- iok इत्यर्थे संवादे किं पदमस्ति?
- e/kje~ अस्यकः अर्थः?
- fo"k;k% अस्य किं विशेषणं संवादे अस्ति?
- संवादे o.kZf;";fr इति क्रियायाः कः कर्ता?
- lfyye~ इति कर्तुः का क्रिया?

mÙkjkf.k – प्राक्, स्वादु, विविधाः, भारती, भविष्यति

7- çl³xkuqlkjeFkZ fy[kr &

1. vfHkuUnua ok कुर्वन्तु।
   धन्यवादम् स्वागतम् प्रणामम्
2. अन्तः बहिः च तत् विमानं fogjfr।
   परिहरति, çgjfr सञ्चरति
3. प्रशंसनीया भवत्याः çLrqfr%।
   संस्तुतिः प्रस्तावः मण्डनम्
4. Lokn सलिलं पुरुषद्वये भवति।
   मधुरम् साधुः कयादुः
5. चतुर्गुणेन lhlu स्वर्णं शोधनीयम् ।
   मासेन श्वासेन लोहेन

mÙkjkf.k & स्वागतम्, संचरति, मण्डनम्, लोहेन,

ikBk/kkfjr% lL—r lkfgR;ifjp;%

1- ikBxr% lL—r &lkfgR;ifjp;% &

1. प्रथमःपाठः – चत्वारःवेदाः ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः

उपवेदाः
ऋग्वेदः – आयुर्वेदः
यजुर्वेदः – धनुर्वेदः
सामवेदः – गन्धर्ववेदः
अथर्ववेदः – अर्थशात्रम्

वेदस्यषडङ्गानि – शिक्षा, व्याकरणं, छ्न्दः, निरुक्तम्, ज्योतिषम्, कल्पः

उपनिषदः – प्रधानतयादश –

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक ,

माण्डूक्य, श्वेताश्वतर, छान्दोग्य, तैत्तरीय, बृहदारण्यक,

इतिदशोपनिषदःसन्ति। प्रथमे पाठे उपनिषदः अपि श्लोकाः स्वीकृताः सन्ति।

यथा–

तृणानि भूमिः – मनुस्मृतिः – मनुना लिखिता

अद्भिःशुध्यन्तिगात्राणि – बौधायनसूत्रम् /बोधायनाचार्येण लिखितम्

यस्तुसर्वाणि – ईशोपनिषदः

सत्यमेवजयते – मुण्डकोपनिषत्

उत्तिष्ठत – कठोपनिषदः

2. द्वितीयःपाठः – सूर्यः एव प्रकृतेः आधारः

ग्रन्थस्य नाम – शिवराजविजयः गद्यकाव्यम्

कविः – अम्बिकादत्तव्यासः

कालः – नवदशशताब्दी

देशः – औत्तरेयः

सूर्यः एव जगतः आधारः। सूर्यः आत्मा जगतः तस्थुषश्च इति ऋग्वेदे अपि वर्णितम् ।

3. तृतीयःपाठः – राष्ट्रचिन्ताबलीयसि,

कविः – विशाखदत्तः

देशः – प्रायःऔत्तरेयः (पाटलीपुत्रम्)

कालः – प्रायःषष्ठशताब्दी

कृतिः मुद्राराक्षसम् – यत्र आचार्य चाणक्यस्य गुण वर्णनम् अस्ति। नायिका रहितं नाटकम् ।

vk- ukVdL; vU;p ikfjHkkf"kd 'kCnk% &

नान्दी – नाटकस्यारम्भे विघ्नविनाशाय स्तुतिः।

सूत्रधारः – मञ्च सञ्चालकः (नाटकस्य निर्देशकः)।

कञ्चुकिन् (कञ्चुकी) – अन्तःपुरचरः वृद्धः महाराजस्य विश्वासपात्रम् ।

स्वगतम् – अश्राव्यं वचनम् (मनसि कथितम्)

प्रकाशम् – सर्वश्राव्यं, (उच्चैःकथनम्)

विदूषकः – स्वकर्मज्ञः हास्यकरः

भरतवाक्यम् – नाटकस्य अन्ते गीयमानम् पद्यम् वचनम् वा

आकाशभाषितम् – आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा/आकाशं दृष्ट्वा कथनम्

4. चतुर्थःपाठः

अ. – दूरदृष्टिः फलप्रदा –

कविः – विष्णुशर्मा

कालः – राजा अमरुशक्तेः समकालिकः (निश्चितःनास्ति कालः)

कृतिः – पञ्चतन्त्रम् नीतिबोधकं काव्यम्

पञ्चतन्त्राणां नामानि

मित्रभेदः,

मित्रसम्प्राप्तिः

लब्धप्रणाशः,

अपरीक्षितकारकम्

काकोलूकीयम्

देशः – औत्तरेयः? अनिश्चितः देशः

5. पञ्चमः पाठः – अहो! राजते कीदृशीयं हिमानि।

अत्र कविकाव्यपरिचयाः सन्ति।

6. सुधामुचोवाचः

अयं च पाठः अनेकेषां कवीनां ग्रन्थैः सङ्ग्रहीतः अस्ति। अतः प्रत्येकम् अपि कवितायाः कवेः देशकालादिपरिज्ञानमत्रावश्यकं भवति। तर्हि प्रदीयते।

1. वदनं प्रसादसदनम् – सुभाषितरत्नभाण्डागारः
2. शिक्षा क्षयं गच्छति सन्दर्भग्रन्थः – कर्णभारम्–इति नाटकात् स्वीकृतः श्लोकः

   कविः – भासः

   अन्यपरिचयः दारिद्र्ये दुर्लभं सत्त्वम् अस्मिन् पाठे दीयते।
3. यथाचतुर्भिः

   पुरुषः – सन्दर्भग्रन्थः – चाणक्यनीतिः

   कविः – चाणक्यः,

   तस्यकृतिः – अर्थशास्त्रम्, चाणक्यनीतिः।
4. व्रजन्ति ते मूढधियः – सन्दर्भग्रन्थः – किरातार्जुनीयम्

   कविः – भारविः
5. स किंसखा साधु न शास्ति – सन्दर्भग्रन्थः – किरातार्जुनीयम्

   कविः – भारविः
6. लोभश्चेदगुणेन किम् सन्दर्भग्रन्थः – नीतिशतकम्

   कविः – भर्तृहरिः

अनेन लिखिताः अन्येग्रन्थाः

1. वैराग्यशतकम्
2. शृङ्गारशतकम्
3. वाक्यपदीयम्

7. दारिद्र्ये दुर्लभं सत्त्वम्

सन्दर्भग्रन्थः – चारुदत्तम्

कवेः नाम – भासः

अन्तिमःपाठः – आश्चर्यमयं विज्ञानम्

अत्रप्रायः पञ्चग्रन्थानाम् उल्लेखः भवति। तत्सन्दर्भानुसारं तेषां कवीनां विषये संक्षिप्तः परिचयः प्रदीयते –

1. भागत्रयंभवेदस्य .... ग्रन्थः –बृहद्विमानशास्त्रम् –ग्रन्थस्यकर्ता– भारद्वाज मुनिनाविरचितः स्वामिब्रह्ममुनि परिव्राजकेन सम्पादितः कालः इत्यादिकं नावगम्यते यतः ऋषिप्रणीतत्वात्।
2. शल्यचिकित्साविज्ञानम् – ग्रन्थस्यनाम – सुश्रुतसंहिता

   रचयिता– सुश्रुतः कालः इत्यादिकंनावगम्यते यतः ऋषिप्रणीतत्वात्
3. आर्यभटः – कृतिः – आर्यभटीयम्

   कविः – आर्यभटः –ग्रन्थःगणितविषयकः

   कालः – पञ्चमशताब्दी

   देशः – कुसुमपुरं चन्द्रगुप्तमौर्यस्य
4. चाणक्यनीतिः + अर्थशास्त्रम् – कौटिल्यः अर्थात् चाणक्यः

   ग्रन्थकालः – द्वितीय चन्द्रगुप्तमौर्यस्य समकालिकः

   देशः – पाटलीपुत्रम् / तक्षशिला
5. वराहमिहिरः कृतिः – बृहत्संहिता

do;%	n'k%	dky%	—fr%
कालिदासः (उपमाकालिदासस्य)	उज्जयिनी	ई पू 2 शतमानम्	रघुवंशम् कुमारसम्भवम् मालविकाग्निमित्रम् विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलं इत्यादि
भारविः	अचलपुरम्	6 शताब्दी	किरातार्जुनीयम्
माघः	गुर्जरः	ई 5 शताब्दी	शिशुपालवधम्
बाणभट्टः	कान्यकुब्जः	सप्तमशताब्दी	कादम्बरी, हर्षचरितम्
भतृहरिः	भारतम्	षष्ठशताब्दी	शतकत्रयम् / वाक्यपदीयम्
आर्यभटः	कुसुमपुरी	पञ्चमशताब्दी (5)	आर्यभटीयम्
कौटिल्यः, चाणक्यः	तक्षशिला	चन्द्रगुप्तमौर्यस्य समकालिकः	अर्थशास्त्रम् चाणक्यनीतिः
भवभूतिः	विदर्भः (पद्मपुरम्)	प्रायः सप्तमशताब्दी	उत्तररामचरितम्
भासः	उत्तरभारतवासी	उत्तरभारतवासी ई. पू चतुर्थशताब्दी	प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् स्वप्नवासवदत्तम्, चारुदत्तम्, कर्णभारम् इत्यादि चतुर्दशनाटकानि
सुश्रुतः	————	–2 शताब्दी	सुश्रुतसंहिता
वराहमिहिरः	अवन्ती	षष्ठशताब्दी	बृहत्संहिता
विष्णुशर्मा	महिलारोप्य नगरम्	2 शताब्दी	पञ्चतन्त्रम्
अम्बिकादत्त व्यासः	जयपुरम्	1859–1900 ई	शिवराजविजयम्
दण्डी	काञ्चीपुरी	सप्तमशताब्दी (7)	दशकुमारचरितम्, काव्यादर्शः
जयदेवः	वङ्गदेशः	11 तमशताब्दी	गीतगोविन्दम्
श्रीहर्षः	कान्यकुब्जः	प्रायः द्वादशशताब्दी	नैषधीयचरितम्
भोजः	धारानगरी	प्रायः चतुर्थशताब्दी	चम्पूरामायणम्, सरस्वतीकण्ठाभरणम्

।। संस्कृतसाहित्यपरिचयः।।

1. छन्दोयुक्तरचना पद्यम् इति कथ्यते।
2. पद्यकाव्यस्य भेदद्वयं महाकाव्यं खण्डकाव्यं च।
3. नव– रसाः संस्कृतकाव्येषु भवन्ति।
4. तेषु रसेषु शृङ्गारः प्रधानः रसः भवति।
5. गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।
6. कथा आख्यायिका च गद्यस्य भेदद्वयम्।
7. रूपकस्य दशभेदाः भवन्ति।
8. नाटकम् रूपकस्य एकः भेदः
9. नाटकस्य मुख्यं तत्त्वं अभिनयः अस्ति।
10. नाटकस्य आदौ नान्दी भवति।
11. अन्ते च भरतवाक्यं भवति।
12. गद्यपद्यात्मकं काव्यं चम्पू इति कथ्यते।
13. उत्तररामचरितस्य प्रधानः रसः करुण रसः।
14. गोविन्दम् उद्दिश्य जयदेवेन लिखितं काव्यं गीतगोविन्दम् ।
15. .... गद्यकाव्यस्य भेदः। (स्तोत्रम्, आख्यायिका, रूपकम्)
16. महाकाव्यम् .... भेदःभवति (गद्यकाव्यस्य, नाटकस्य, पद्यकाव्यस्य)
17. कञ्चुकी राजभवनस्य .... भवति। (सन्देशवाहकः, वृद्धसेवकः राजपुरोहितः)
18. सूत्रधारः नाटकस्य .... करोति। (मञ्चसञ्चालनं, वार्तां वदति, महाराजस्य विश्वासपात्रम्)
19. विदूषकः नाटके .... इति प्रथितः (कुलपुरोहितः, रसज्ञः, हास्यकारः)
2. महाश्वेता कादम्बरी इति गद्यकाव्यस्य नायिका।